ॐ R.S.

राधा स्वामी सहाय

स्वामी गोविन्द कोल - माता कमला - पण्डित दयाल

सत्संग भवन

मानव कल्याणार्थ

एक आध्यात्मिक भेंट

"बन्सरी नाद"









मूल्य : 55/–









ॐ R.S.

“गुरु दयाल की दया।
अन्तर कपाट खुल गया।।”

मानव कल्याणार्थ

एक आध्यात्मिक भेंट

“बन्सरी नाद”

भाग–2

भजन नं॰ : 104 -162

पूजनीय माता जी के नाम समर्पित

बन्सीलाल कोटवाल (बन्सरी)

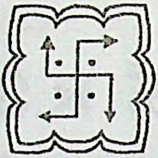
राधा स्वामी सहाय

स्वामी गोविन्द कोल - माता कमला - पण्डित दयाल

सत्संग भवन

महेन्द्र नगर, कनाल रोड़

जम्मू



आदि मंगल सूचक चिह्न

स्वास्तिक !

मूल मन्त्र

"ओम हरिः नमः!"

—००—

जाप मन्त्र चिह्न



ओ३मकारऽ आधारऽ' आदि दीवय।
आदि अन्ति रस्ति आनन्दो हो।।

(स्वामी गोविन्द कोल जी)

ॐ R.S.

भजन सूची

ॐ **R.S.**

राधा स्वामी सहाय

ऊँ श्री सरस्वती रूपाय गुरुवे नमः।

संक्षिप्त भूमिका

यह तो मालिक का मौज ही है कि शीघ्रता के कारण 'बन्सरी नाद' काव्य माला के प्रथम भाग में सभी भजन छप न सकें। अतः इसका यह दूसरा भाग भी प्रस्तुत करना पड़ा जिसमें अब यह शेष छूटे हुए भजन भी प्रस्तुत किये गये। साथ ही इस में आदि गुरुओं की रूपरेखा अर्थात् राधा स्वामी मत का अनुक्रम भी पेश किया गया, जिस से आदि गुरूओं के विषय में कुछ–कुछ संक्षिप्त जानकारी प्राप्त हो सके। यह सभी भजन योग साधना के प्रति जानकारी तथा आध्यात्मिक मार्ग से प्रदान करने में हितकर तथा सहायक सिद्ध हो सकें।

आशा करते हैं कि इन भजनों के द्वारा कीर्तन का लाभ तथा एहलोकिक व पारमार्थिक कल्याण प्राप्त हो कर सभी भझजनों का आध्यात्मिक उद्धार तथा मनुष्य जन्म की सफलता प्राप्त हो जाए। सभी संगत, पाठक गण तथा हम सभी माता जी, सन्तों व आदि गुरूओं के आशीर्वाद का लाभ प्राप्त करें जो इन भजनों में गुप्त रूप से निहित है।

अब यदि कोई त्रुटि प्रतीत हो तो कृपया मौखिक अथवा लिखित रूप से दिखाने का कष्ट करें ताकि उसकी

शुद्धि सहर्ष की जाए और हमारा वास्तविक तथा पूर्ण कल्याण हो जाए जो इस पुस्तिक के रचने का मुख्य उदेश्य व अभिप्राय है।

"दिल म्य न्यूथम दूरऽ' फले।
नूरऽ'ज़्वले त्रोव गाह।।"

भवदीय,
बन्सी लाल कोटवाल
(बन्सरी)

24—अशोक नगर,
कनाल रोड़, जम्मू।

ॐ **R.S.**

ॐ राधा स्वामी
सहाय!

योग साधना विषयक उपयोगी जानकारी

जो योग साधना में सफलता चाहता है उसे निष्काम कर्म करने की आवश्यकता है। इसी के विषय में श्रीमद् भगवद् गीता के यह श्लोक प्रस्तुत हैं :—

(क) **आरुरूक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते।**
योगारूढ़स्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते।।

अर्थात् :— योग में आरूढ़ होने की इच्छावाले मननशील मनुष्य के लिए निष्काम भाव से कर्म करना ही हितकर कहा जाता है और योगारूद हो जाने पर उसका जो सर्व संकल्पों का अभाव हो जाता है वही कल्याण में हेतु कहा जाता है। तात्पर्य यह कि शुभ—अशुभ संकल्पों का त्याग करके अपने सच्चिदानंद परमात्मा स्वरूप में येन केन प्रकारेण स्थित होना ही योग साधना की सफलता है।

(ख) **अनन्याश्चिन्तयन्तो माम् ये जनाः पर्युपासते।**
तेषां नित्याभियुक्तानां योग क्षेमं वहाम्यहम्।।

अर्थात : जो भक्त जन मुझ परमेश्वर का निरन्तर चिन्तन करते हुए निष्काम भाव से भजते हैं, उन अनन्य प्रेमी नित्य—निरन्तर मेरा चिन्तन करने वालों का योग क्षेम मैं

अपने ऊपर लेता हूँ अर्थात् स्वयं प्राप्त कर देता हूँ।

भगवत् के स्वरूप की प्राप्ति का नाम 'योग' है और भगवत् प्राप्ति के निमित्त किए हुए साधन की रक्षा का नाम क्षेम है।

हमारी जीवन शक्ति का विकास शुद्ध, सात्त्विक सदाचारी जीवन तथा विधिवत् योग साधना पर आधारित है। हमारी जीवन शक्ति पर निम्न बातों का प्रभाव पड़ता है जिन को योग साधना द्वारा ही सहज बगया जा सकता है।:—

(1) मानसिक तनाव;
(2) भाव—विभाव;
(3) संगीत—कीर्तन;
(4) आहार विहार;
(5) शारीरिक स्थिति; और
(6) वातावरण।

(1) जिह्वा को तालुस्थान में लगाने से मस्तिषक के दायें और बायें दोनों भागों में सन्तुलन स्थापित होता है। शक्ति—सुरक्षा का यह एक अच्छा उपाय है। जो योग साधना की ही एक विधि है।

(2) दिव्य प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, उद्योग; आत्मानन्द आदि सुभावों से जीवन शकित को पुष्टि मिलती है। प्रसन्नचित्त होने से तथा ईश्वर के प्रति धन्यवाद जैसे भाव विचारों से जीवन शक्ति का विकास पूर्ण होता है। यह भी योग साधना द्वारा सुलभ हो सकता है।

इस के विपरीत ईर्ष्या, घृणा, वैर, तिरस्कार, भय, कृशंका (Negative thinking) आदि कुभावों से जीवन शक्ति क्षीण होती है, जो योग—साधना में बाधक बनते है।

(3) प्रिय—काव्य, गीत, भजन—कीर्तन, श्लोक आदि के पठन—पाठन तथा उच्चारण करने से जीवन शक्ति का विकास होता है। जैसे पवित्र—संगीत के स्वर, ध्वनि की तरंगे (आन्तरिक तथा बाहय), कीर्तन (सामूहिक), भजन आदि जीवन शक्ति बढ़ाने में सहायक होते हैं। जीवन तत्त्व में विश्रान्ति दिलाने में पवित्र—संगीत का महत्त्वपूर्ण हाथ होता है। चित्त की एकाग्रता इस पर बहुत कुछ निर्भर होती है। भगवत् भजन से चार बातों की प्राप्ति होती है:—

(क) भगवान के एकश्वर्य का अनुभव;

(ख) तात्कालिक दुःख का अभाव;

(ग) रजोगुण—तमोगुण का अभाव;

(घ) परमानन्द की प्राप्ति।

जिस कर्म से, जिस श्रवण से, जिस चिन्तन से, जिस जप से, भगवद् आकार वृत्ति बनती है वह भजन कहलाता है जो योग—साधना का लक्ष्य होता है तथा जो ईश्वर के द्वार तक पहुँचा देता है।

(4) कृत्रिम खाद्य पदार्थो तथा तामसिक खाद्य पदार्थो से जीवन—शक्ति क्षीण होती है। सात्विक भोजन तथा सुकृत अन से मन शान्त व हल्का रहता है जो योग साधना के लिए लाभदायक होता है।

(5) बिना ढंग के बैठने, सोने, खड़े रहने तथा चलने से जीवन—शक्ति का व्यय होता है। कमर, रीढ़ की हड्डी, गर्दन व सिर सीधे रखकर बैठने—चलने व योग—अभ्यास करने से जीवन—शक्ति बढ़ जाती है।

(6) हमारे वायुमण्डल में होने वाले प्रदूषण तथा घर गृहस्थी के खिचाव से जीवन शक्ति क्षीण होती जाती है। अतः संत महा पुरुषों के चित्रों के दर्शन, 'स्वस्तिक' के चित्र को

एकटक निहारने, तथा सत्गुरु के चरण कमलों के ध्यान तथा नाम जाप से अनजाने में ही जीवन शक्ति का लाभ होता है।

आत्मबल को जगाना, आत्मज्ञान को बढ़ाना, आत्म प्रीति को पाना ही मनुष्य जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जीवन शक्ति का विकास अत्यन्त आवश्यक है जो योग साधना का वास्तविक लक्ष्य है।

मालिक कुल सब का कल्याण करें!

भजन नं॰ (104)

"नाम स्मरण का योगिक न्यास"

गज़मुऽ'ख छु आसऽ'वुन प्रज़लवुन सितार।
ॐ हरि: नम: अमिकुय आधार।।०।।
च़्वन वथरन मंज़ छु कुण्ड़लाकार।
मूलाधार योऽ'हय ग्वडऽ'न्युक छु द्वार।।
ग्वडऽ'न्यथ अतिथिय करुन छु जुहार।।०।।
स्वाधिष्ठान वुछ छु षठ्कोणाकार।
ब्रह्मस्थान छु ब्रह्म मंत्र छुस तार।।
मनिपुर चक्र विष्णो सुन्द छु द्वार।।०।।
अनाहत् चक्र चूरिम छु दरबार।
जोत निरञ्ऽ'जन बनान अति साकार।।
मायायि हुन्द मिटान अति छु अन्धकार।।०।।
मधिमायि ज़ोतान छि सुरतिच्य धार।
सारंग रारंगिच्य वज़ान तार।।
रुमऽ' रुमऽ' बोलान छु रारङ्कार।।०।।
भ्रूमध्य मन्ज़ ज्योती हुन्द भण्ड़ार।
सो३हम शब्दऽ' चम्कान ओ३मकार।।
शुन्य चक्रस मंज़ गछ़ान सञ्चार।।०।।
उद्धऽ' गीतकुय छु ग्रज़ान हुँकार।
नाना शब्दन हुन्द झञ्कार।।
बोज़ छु वज़ान सनऽ'वुन सेतार।।०।।

पाँचन नावन हिऽ'न्ज़ कुनी तार।
राधा स्वामी छुख सरकार।।
अलरव अगम आनन्द छु अपार।।०।।

राधा स्वामी शब्दऽ'च्य पुकार।
स्मरण घ्यान तय धुन छु सार।।
जीवन मुक्त बनान ज़ीव हुशियार।।०।।

सूरतस तऽ' शब्दस संगम छु सार।
सुन्न महा सुन्न अपोर छु लगान तार।।
भँवर ग्वफि नीरिथ यिवान करार।।०।।

बुम्बुर बनिथिय सुरतिच्य धार।
सहस्रदल कमलस करान गुञ्जार।।
धुन्न आत्मऽ' शब्दस गछान बलिहार।।०।।

सत्गुऽ'रऽ' मेहर अति छय दरकार।
यस बनि छावि अन्दऽ' बन्दऽ' सु बहार।।
बन्सरियो वुछि सु न्वन दीदार।।०।।

भजन नं॰ (105)

"नाम दानी सत्गुरु की शरणता... से उद्धारता की भावना!"

ओ३म हरि: नम:, ओ३म हरि: नम:।।
पानऽ' म्यानि रोज़तो स्वरान हर दमाह।।०।।
गुऽ'रऽ'सिय सीऽ'त्य पान करतो अभ्यन्न।
गुऽ'रऽ' शब्दिय ज़पान रोज़तो अच्छ़्यन।।
सत्गुऽ'रन निशि ह्यछ़तो अम्युक क्रमाह।।०।।
गुऽ'रऽ' कृपा यस यलि छि बनन।
असलियत तस त्यलि छि ननन।।
अन्द्रय छुस वज़ान ज़ीरो बम्माह।।०।।
करोरन दु:खन छु कुनिय दवा।
गुऽ'रऽ' च़रणन हिऽ'न्ज़ अमृत लवा।।
अमि सीऽ'त्यी यिवान सोरुय जम्माह।।०।।
गुऽ'रऽ' च़रणन हिऽ'न्ज़ आराधना।
थज़ि खुऽ'तऽ' थऽ'ज़ छय साधना।।
गुऽ'रऽ' मन्त्रस छुय थ्वद महिमाह।।०।।
सत्गुऽ'रऽ' पादन तल च़ऽ' न्यम।
मूलाधारस करिथ प्रकरम।।
शरणागतन करान साऽ'रिसिय क्षमाह।।०।।
गुऽ'रऽ' च़रण यिम न्यथ छि छलन।
प्राणकुय च़न्दुन दोहय मलन।।
अन्द्रय च्यवान तिम आबि ज़म ज़माह।।०।।

गुऽ’रऽ’ मन्त्रस पऽ’ज़्य यच्छ पच्छ़ चऽ’ भर।
वुछतऽ’ नेरी अदऽ’ सोरिय च़्य शर।।
प्राणऽ’ पवनऽ’ प्रज़लान रोज़ि शम्माह।।०।।

मो लार छुऽ’टिसिय सुऽ’खस पतऽ’।
परमानन्दच्ये छ़ांड़तो वतऽ’।।
मशिरावतो दिहिक सारी गमाह।।०।।

‘बन्सरियो’ सोरुय छु कर्मऽ’ फल।
छलतो कर्मन हिऽ’न्द यिमय मल।।
सम्सारिक त्रावतो चिय तम्माह।।०।।

भजन न॰ (106)
“नाम स्मरण का विधि विधान।”

न्यति नियमऽ’ क्रमऽ’ सान।
मन थ्यर करतऽ’ ज़ुवऽ’।
स्वरतऽ’ ज़ुवऽ’ लोलऽ’ सान।
सोऽहम सू।।०।।

गुऽ’डऽ’ मूलाधारस।
प्रकरम करतऽ’ ज़ुवऽ’।
ॐ हरिः नमः परान।
याद करतन सू।
आदि दीवस शुऽ’द्धऽ’ मनऽ’।
प्रणाम करतऽ’ ज़ुवऽ’।।०।।

श्वास उश्वास व्यज़ पाऽ'ठय।
वाल खारतऽ' जुवऽ'।
जय निरञ्जन स्वरान। .
छारतन सू।।
सत् नामस पूरऽ' पाऽ'ठ्य।
लोल भरतऽ' जुवऽ'।।०।।

सतगुऽ'रन बल ह्यथ।
ह्योऽ'र कुन लारतऽ' जुवऽ'।
राधा रूवामी करान।
धारतन सू।।
शिनि छ़टि त्रटऽ' तोपन।
मतऽ' ड़रतऽ' जुवऽ'।।०।।

आत्मऽ' ध्यानऽ' धारनायि।
गुऽ'रय ध्यान धारतऽ' जुवऽ'।
रूवप्रकाशी छुय स्वयं भू।
ब्रह्माण्डऽ' बुर्जस बर। .
मुच़रतऽ' जुवऽ'।।०।।

गुऽ'रऽ' व्यज़ पूर्वक।
प्राण उफऽ'नावतऽ' जुवऽ'।
सुय सोरुय छुय शिवऽ' शम्भू।
तन मन तऽ'स्य पथ निस्सार।
करतऽ' जुवऽ'।।०।।

ह्योत्मुत तऽ'म्य यलि।
ओरय मटि ज़ुवऽ'।
अदऽ' क्याज़ि त्रावी।
मुहऽ' छ़टि सू।।
नाश करि अज्ञानऽ' गटि।
पान तस पुशरतऽ' ज़ुवऽ'।।०।।

बन्सरियिनि मुऽ'खऽ'।
गूव्यन्द ग्यवान ज़ुवऽ'।
प्राणऽ' कुमरि बोलान।
गूव्यन्दऽ' गू।
अन्द वातऽ' नावि परऽ'वाय।
मतऽ' भरतऽ' ज़ुवऽ'।।०।।

भजन नं॰ (107)

"नाम स्मरण की गरिमा व महिमा!"

ज़पान रोज़ रात्र द्यन।
दयि नाविय च़ऽ' तन मन।
फ्वली मन अदय हन हन।
समय रथि खाऽ'रिथिय रोज़।।०।।

शरण रोज़ च़िय सतगुऽ'रन।
तिमन पादन प्य परण।
हरन ज़न्मन हिऽ'न्द अृण।
हृदय फ्वलराऽ'विथिय रोज़।।०।।

तालस दिथिय च़ऽ' ज़्यव।
स्वरानिय रोज़ च़ऽ' प्रणव।
द्वादऽ' शान्तऽ' बुर्जस च़ऽ' दऽ'व।
प्राण उफऽ'नाऽ'वथिय रोज़।।०।।

कर अच्छ़ कन मन बन्द।
ग्यवान रोज़तों च़ऽ' निर्द्वन्द्व।
अज़पा गायत्रय छन्द।
स्वच्छ़यन्द मन नाऽ'विथिय रोज़।।०।।

मानसरऽ' श्रान करिथ।
व्यज़ पाऽ'ठ्य ध्यान धरिथ।
गगनस साऽ'ल करिथ।
मन लय करिथिय रोज़।।०।।

आत्मऽ' तिर्थस मंज़।
संध्यायि हुंद कर संज़।
मशऽ'राऽ'विथ दिहऽ' क्रंज़।
आत्मऽ' बल प्राऽ'विथिय रोज़।।०।।

लोलऽ' सीऽ'त्यी मन भरिथ।
दिहऽ' अभिमानिय हरिथ।
आदि दीविय गछ़ि वरिथ।
पान पुशऽ'राऽ'विथिय रोज़।।०।।

दमऽ' दमऽ' दमनिय ज़ाग।
दमन बस्ति दिल लाग।
दमनिय मंज़ वुज़ि नाग।
दम सम्भाऽ'लिथिय रोज़।।०।।

अगम दीशस च़ऽ' लार।
अतिथिय कर च़ऽ' करार।
सन्मुऽ'ख वुछहन यार।
पान प्रज़ऽ'नाऽ'वथिय रोज़।।०।।

संतन हुंद यि दरबार।
वुछतऽ' कोताह छु शूभिदार।
आसऽ'विऽ'न्य छि मद्दगार।
च़ऽ' सर नुऽ'मराऽ'वथिय रोज़।।०।।

बन्यरियो कर गथ।
सत् नाम सतसिय पथ।
प्राविऽ'न्य छि सहज़ऽ' वथ।
च़ऽ' मन शुऽ'मराऽ'वथिय रोज़।।०।।

भजन नं॰: (108)

"नाम स्मरण द्वारा आत्मा की पहचान"

क्षणऽ' क्षणऽ'य मन बोलऽ'नाव।
लोलऽ' ललऽ'नाव दयि सुंद नाव।।
दिल मिलऽ'नाव आत्मऽ' बल प्राव।।०।।

आत्मा युस छु महान्।
दयि नाव अमिच्यी हेर ज़ान।।
अमि हेरि खस तऽ' पान प्रज़नाव।।०।।

दमऽ' दमऽ' दमन थव ज़ान।
दमन बस्ति रोज़ दमान।।
सू हम सू मन स्वरऽ'नाव।।०।।

दिह तय सम्सार भ्रम ज़ान।
दयि नाविय योत सोर मान।।
राधा स्वामी प्राण ग्यवऽ'नाव।।०।।

ज़न्मऽ' ज़न्मन हुंद अरमान।
कड़ यमि ज़न्मय कास हान।।
रथि खार ज़न्म दिह घरऽ'नाव।।०।।

धारनायि रोज़ धारान ध्यान।
शेरि मंज़ रोज़ शेरान प्राण।।
ब्रह्माण्ड़स सुरत वातऽ'नाव।।०।।

हनि हनि मंज़ युस छु ताबान।
मंज़ मनि छु सुय ज़ोतान।।
वनि कड़तन मन शोलऽ'नाव।।०।।

गुऽ'रऽ' शब्द छु व्यमान।
ज़ान कर तुँ वात ला मकान।।
हमसऽ' परवविय प्राण उफऽ'नाव।।०।।

भक्ति वत्सल गुऽ'र छि आसान।
विऽ'ह्य तय वाय तिम छि कासान।
प्रथ मुकामय सुय म्वलऽ'नाव।।०।।

शिव तऽ' शक्ती भ्युऽ'न मो ज़ान।
शक्ती सीऽ'त्यी शिव मेलान।।
हीं श्रीं हूँ फ्राँ मनि खनऽ'नाव।।०।।

बन्सरियो गुऽ'रऽ' छि भगवान।
वीद आमित्य यी वख्नान।।
चऽ'ति तिहिऽ'न्दी चरण
ललऽ'नाव।।०।।

भजन नं० (109)
"नाम स्मरण वास्तविक ज्ञान की कढ़ी!"

स्वरता पानो प्वज़ यार छु ओ३मकारिय।
युथ ना मशियो बाऽ'ज़्यगार छु सम्सारिय।।०।।
दुऽ'ह तारऽ' गिन्दुना वाँगिज्य वाऽ'रिय।
वाँऽ'स सोरान क्रन्जिल्यन पाँ साऽ'रिय।
सोर कस रूद यावुन तऽ' ल्वकऽ'चारिय।।०।।

दिह सोरान वुछ छुय बन्दऽ' बन्दय।
दंद तऽ' बन्ध नो पोशान अन्दऽ' वन्दय।।
दिहऽ' अभिमान त्रावतो मन चऽ' मारिय।।०।।
पान सरऽ' कर मंज़ यमि भवसरय।
आत्मा वुछ छु अज़र तऽ' अमरय।।
सत् स्वरूपस प्यठ करतो करारिय।।०।।
पानऽ' सान ज़ान माऽ'लिकि कुल छु पानय।
शिविय निर्मल वुछ बसिथ छु दानऽ' दानय।।
दर तन छारतन पज़रुक सु यारिय।।०।।
संकल्प त्यागिथ रोज़तो चऽ' मस।
गलि गले गछ़ च्यवान समतायि रस।।
समऽ' भाव प्राव फ्वलऽ'राव सहस्रारिय।।०।।
सुय चि़य चि़य सुय करतो चऽ' बुद्धी।
खुदी त्राव अदऽ' हो बनी च़्य शुद्धी।।
प्रज़ऽ'नाव पान करतो चि़य व्यचा़रिय।।०।।
अ—व—म ज़ाग्रत—स्वप्न—सुष्पती।
मात्रा तऽ' तुरिया यिमन मंज़ छि बसिथिय।।
त्र्यन अवस्थायन यिमय छि आधारिय।।०।।
त्रिसंध्याये हुंद छ़ार चऽ' व्यस्तारिय।
तुरिया तीतस प्यठ कर करारिय।।
धारनाये सतगुऽ'रऽ' ध्यान चऽ' धारिय।।०।।
कन दिथ रोज़ बोज़ अनहद नादिय।
न्यबरिम त्राव सोरुय चऽ' वाद वादिय।।
अन्द्रय रोज़ बन्सरियो हुश्यारिय।।०।।

भजन नं॰ (110)

“नाम स्मरण व सांसारिक व्यवहार में सम्बन्ध!”

ज़लऽ' मंज़य ख्यलिय द्राव।
अथ मा लास्यव हवाव।
ख्यलची व्रत्त पानस च़ऽ' थाव।।०।।
हर दमऽ' स्वर सतगुऽ'रऽ' नाव।
रटि बाल पानय सु नाव।।
वुछतऽ' अदऽ' मा पोरि विजऽ' वाव।।०।।
द्वन्द्वा द्वन्द्व सोरिय च़ऽ' त्राव।
अदऽ' रोज़ि नऽ' कुनिची ग्राव।।
पान दयसिय च़िय पुशऽ'राव।।०।।
मानसरऽ' गुऽ'तऽ' ख्वर मन बनाव।
हथ कमल च़िय फ्वलऽ'नाव।।
बन च़ऽ' ढुँगल मानसर छाव।।०।।
अन्द्रिमिय न्यत्र मुच़ऽ'राव।
सत् स्वरूपस नज़र च़ऽ' थाव।।
मनि मन्दरस चूनि जरऽ'नाव।।०।।
दयि लोलऽ' सीऽ'त्य मन च़ऽ' रंगऽ'नाव।
प्रथ तरफऽ' लोलिय भाऽ'गराव।।
सर्वऽ' आत्म भाविय च़ऽ' प्राव।।०।।
पान पनऽ'नुय वारऽ' प्रज़ऽ'नाव।
यी छुख तऽ' ती याद पाव।।
तीज़ऽ' ज़लय मन पनुन नाव।।०।।

वहमिच्य मऽ'ट फुटरिथ थाव।
मनि प्राव शान्त स्वभाव।।
दिहऽ' द्वारिका तिर्थ बनाव।।०।।

सतगुऽ'रऽ' च़रण लोलऽ' ललऽ'नाव।
तमि सीऽ'त्यी मन च़ऽ' सुलऽ'नाव।।
अदऽ' वुछत म्वकलि आव तय जाव।।०।।

बन्सरियो भाव बड़ऽ'राव।
सतगुऽ'रऽ' ध्यानिय लगाव।।
यमऽ' भयि तय वसऽ' वास त्राव।।०।।

भजन नं॰ (111)

“नाम स्मरण का अजपा स्वरूप!”

सोज़ऽ' सान रोज़ करिथिय छुऽ'पऽ'दम।
प्रणव छु वज़ान बोज़ ज़ीरऽ' बम।।०।।
प्राणव सीऽ'त्य ग्यव प्राणव चऽ' बोज़।
प्राण अपान वारऽ' शीरिथ रोज़।।
म्युल बनि दुऽ'शविऽ'न्य स्वरिथ सू हम।।०।।
प्राणव शब्दस कन वारऽ' थव।
गुऽ'रऽ' व्यज़ पूर्वक अथ पथ चऽ' छव।।
सतगुऽ'रऽ' छु सीऽ'त्य सीऽ'त्य कमिकुय छु गम।।०।।
गुऽ'रऽ' शब्दऽ' तन मन लय करऽ'नाव।
रुमऽ' रुमऽ' पानय ओ३म बोलऽ'नाव।।
वाह वाह बोज़ ढुम ढुम ढ़म ढ़म।।०।।
सनियासा लाऽ'गिथ चि़य नेर।
वासऽ'नायि त्याऽ'गिथ मो कर चे़र।।
च्यावान रोज़ सू त्राऽ'विथ हम।।०।।
दच्छिन तऽ' खोहविर मो चऽ' दऽ'व।
मंज़िमे वति वुछ चम्कान छु रऽ'व।।
मन्ज़्य मन्ज़्य मन्ज़िलन करिथ प्रकरम।।०।।
सुरतिऽ'च्य धार ज़ोतान छि किरण।
नादस पथ लारान ज़न हिरण।।
मऽ'त्य मऽ'त्य क्याह सना बनि संगम।।०।।

सुरतस तऽ' शब्दस म्युल वारऽ' कर।
गुऽ'रऽ' मन्त्रस पऽ'ज़्य यच्छ़ पच्छ़ च़ऽ' भर।।
गुऽ'रनिय वन्द जुव जान हर दम।।०।।
अन्दर अचि़थिय सुऽ'न्दर च़ऽ' बेह।
गुऽ'रऽ' चरणन हुन्द गनिराव श्रेह।।
मनि फलिसिय मनि मंज़िय च़ऽ' नम।।०।।
ज़ेरि ज़ेरि शेरि किन्यी नेर फेर।
शेरि मन्ज़िय प्राण वारऽ' पाऽ'ठय शेर।।
ह्योरि ह्योर खस स्वत स्वत तुल कदम।।०।।
अन्द्रिमिय तीज़ वारऽ' प्रज़ऽ'लाव।
तुरिया तीतस भर चि़य भाव।।
मनि आऽ'नस च़ऽ' कास खय यक्दम।।०।।
मानसरऽ' तीज़ऽ' ज़ल मल च़ऽ' छलऽ' नाव।
राधा स्वामी शब्दऽ' सीऽ'त्यी च़ऽ' रंगऽ'नाव।।
हमसन सीऽ'त्यी कर समागम।।०।।
तीज़ऽ' ज़लऽ' लोलऽ' वुज़िन्या वुज़ऽ' नाव।
तमि सीऽ'त्स भक्ति–कुल्य वारऽ' सगऽ'नाव।।
बन्सरियो प्राव शम तय दम।।०।।

भजन नं० (112)

“नाम स्मरण भवसागर को पार कराने वाला यन्त्र!”

दयि नाव सरऽ युस करि लोलो।
यमऽ भयि तस क्याह करि लोलो।।०।।
सुरत करि लय शबदस सीऽत्य।
दिहऽ निशि तनिथिय रोज़ि तऽथ्य सीऽत्य।।
ज्ञानऽ प्रकाश प्रावि मरि लोलो।।०।।
ज़ीवात्मिऽच्य प्रावि पूरऽ पाऽस्यज़ान।
रऽवऽ सिऽन्दि ख्वतऽ रोज़ि प्रवऽ त्रावान।।
तीज़ऽ ज़ल छावि लरि लरि लोलो।।०।।
अज़र अमर छु आत्मऽ दीव।
परि पूर्णिय छु परमात्मऽ दीव।।
दुऽशविन्य करि म्युल तरि लोलो।।०।।
अज़पा गायित्रय छु अमिकुय प्राण।
रुमऽ रुमऽ छि पानय ओ३म बोलान।।
सोरिय अदऽ गछ़ान वरि लोलो।।०।।
रिन्दऽ बनिथिय ज़ीव ज़िन्दय मरान।
दिवता तऽ कारण तस छि वरान।।
अदऽ कति सु कालस ड़रि लोलो।।०।।
सतगुऽरऽ रोज़ान तस मेहरबान।
यन्द्राज़ऽ दीव ह्यथ तस छु पूज़ान।।
दय लभान पनऽन्ये सु घरि लोलो।।०।।

तस ढ़ीशिथ छि साऽ'री तोषाण।
शीषनाग त्वतनस छुस नऽ' पोशान।।
पोश फ्वलान तस छि प्रथ थरि लोलो।।०।।
ही शिवऽ' कीशवऽ' कऽ'ड़ म्य अरमान।
बन्सरी नाद छु बन्सरियस प्रयान।।
सुय म्य बोज़नाव गरि गरि लोलो।।०।।

भजन नं० (113)

"नाम स्मरण की वास्तविकता!"

दुनिया वुछतऽ' कोताह छु नश्वर।
दयि नाविय योत अति छु अमर।।०।।
दयि नाविय रस्युल ज़ाऽ'व्युल छुये।
भवऽ'सरऽ' तारस तार छुये।।
अऽ'थ्य सीऽ'त्य तन मन लय चऽ' कर।।०।।
दयि नाविय दमऽ' दमय चऽ' स्वर।
गुऽ'रऽ' शब्दय सीऽ'त्य मन रोज़ि थ्यर।।
ओरय यिन मुच़रनऽ' दारि बर।।०।।
दिल दिथ रोज़ स्वरान रात तय दुऽ'ह।
सुऽ'म्बरानिय रोज़ कोह दर कोह।।
अदऽ' वुछतऽ' मा रोज़ि कुनिकुय ड़र।।०।।
च़्यत् नाम तुऽ'रगसिय तय चऽ' कर।
स्व प्रकाशस प्यठ धर नज़र।।
स्व प्रकाशी चि़य ज़ानतन हर।।०।।

दयि नाविय तारवुन छु रथिय।
सतगुऽरिय चलावन वोल अथिय।।
प्राणविय सु बोज़निची अमल कर।।०।।

गुऽरऽ मायि सीऽत्य गलान आपदाये।
गुऽरऽ सायि सीऽत्यी अन्दान न्याये।।
पायि बऽड़िसिय तऽस्य चऽ मायी भर।।०।।

बन्सरियो वुछ बसिथ छु ज़रऽ ज़र।
शिविय ज़बर शिविय हो सुऽन्दर।।
दयि नावऽ मुऽय च्यथिय गछ़ि सर।।०।।

भजन नं०: **(114)**

"नाम स्मरण सांकेतिक अभ्यास!"

स्मरण ध्यान भजनिय।
करु ज़ुवऽ रात्र द्यनिय।।०।।

खोच़ मो ज़्यादऽ कमसिय।
चऽ कर लुरऽ पारऽ गमसिय।।
ह्य ह्यमथ हमसऽ परवनिय।।०।।

तिल छुय असलुक निशान।
दिलच्यव अच्छ़्यव गछ़ वुछान।।
कन थव अति चऽ कनऽनिय।।०।।

त्रिकूटी प्यठऽ तुल दऽव।
चम्कान नेरि अति रऽव।।
दशमो द्वार ह्य खोलुनिय।।०।।

संत दल कमल फ्वलऽ'नाव।
सतगुऽ'रऽ' च़रण म्वलऽ'नाव।।
आगस ह्य अति ज़ागुनिय।।०।।

थवतो तोरच्यी च़ऽ' कल।
तोर यियि मुच़रनऽ' जल।।
द्वादशान्तस छु वातुनिय।।०।।

पारिज़ात कुलिसिय तरू।
लारतऽ' ज़ुवऽ' चि़य जल जल।।
वासनायि मल छु छलुनिय।।०।।

भगवत नाव छु सोरिय।
ज़ोन तमी यऽ'म्य व्यच़ोरिय।।
तोर तमी पान पनुऽ'निय।।०।।

अगमस तय अन्नामस।
भर प्रय च़ऽ' सत् नामस।।
सत् धामस छु बसुनिय।।०।।

बन्सरियो कर अमल।
छल कर्मन हिऽ'न्द च़ऽ' मल।।
रिन्दऽ' बनुन छु ज़िन्दऽ' मरुनिय।।०।।

भजन नं०: (115)

"नाम स्मरण आत्म प्रकाश रूपी आनन्द का आधार!"

करान रोज़ दमन शुमार।
दियी दय पानय च़्य तार।।०।।
दयालो छु दय पानय।
च़ऽ' साऽ'रिसिय दार शानय।।
यियी हो अदय च़्य करार।।०।।
भक्ति वत्सल तस छु नाव।
छु शीतल तमिसुन्द स्वभाव।।
थुऽ'द छु दयि सुन्द दरबार।।०।।
दयि लोलिय च़ऽ' गनिराव।
दयस च़िय पान पुशऽ'राव।।
कल्याणुक छु सुय भण्ड़ार।।०।।
मन पनऽ'नुय च़ऽ' शुऽ'मराव।
अहम सोरिय च़िय त्राव।।
अदय फेरी च़्य शेहजार।।०।।
दमकुय हमस च़ऽ' परऽ'नाव।
दमऽ' दमऽ' सू स्वरऽ'नाव।।
प्रावतो च़ऽ' सहज़ऽ' व्यच़ार।।०।।
भ्रूमध्य किऽ'न्य कदम त्राव।
अन्द्रिम न्यत्र च़ऽ' मुच़ऽ'राव।।
छु प्रज़ऽ'लान अति ओ३मकार।।०।।

रातस दोहस तस ज़ाग।
अन्द्रय वुज़ि अति नाग।।
वुज़िनि सीऽत्य बनि मिलऽच़ार।।०।।

आत्मिऽच्य ज़ानिय च़ऽ प्राव।
गाशसिय गाश मिलऽनाव।।
फ्वलान रोज़ी च़्य सहस्रार।।०।।

भक्ती सीऽत्य च़ऽ रंगऽनाव।
पनऽनुय पान च़ऽ प्रज़ऽनाव।।
छु बन्सरियो युऽहय सार।।०।।

भजन नं॰ (116)

"नाम स्मरण अनमोल गुप्त सम्पती!"

नामिय छु रस ताऽय;
रसऽ पज़ि च्युऽनुय;
रसऽ पज़ि च्युऽनुय;
युथ ना बोजि ठस काँह;
ह्यसऽ पज़ि ह्युऽनुय;
ह्यसऽ पज़ि ह्युऽनुय।।०।।

गुऽरनिय निशि गछ़ि;
वारऽ ह्यछुनिय;
वारऽ ह्यछुनिय।
मायि सान धारनायि;
गछ़ि धारुनिय;
गछ़ि धारुनिय।।०।।

श्वास उश्वासन गछ़ि पय थवऽ'नुय;
गछ़ि पय थवऽ'नुय।
आसन धाऽ'रिथ मन लय करऽ'नुय।।
मन लय करऽ'नुय।।०।।

पानसिय मंज़ तस द्युन गछ़ि वुऽ'नुय;
द्युन गछ़ि वुऽ'नुय।
होशऽ' पोशव तस करुन वर्षुनुय।।
करुन वर्षुनुय।।०।।

दासऽ' भावऽ' गछ़ि तस शरणिय युनुय;
शरणिय युनुय।
ज्ञानऽ' दृष्टि खुलि त्यलि च़लि अुऽ'नुय।।
त्यलि च़लि अुऽ'नुय।।०।।

जंगलन तऽ' कोहन छुनऽ' लारुनुय;
छुनऽ' लारुनुय।
यलि वरि त्यलि बनि घरि दर्शुनुय।।
घरि दर्शुनुय।।०।।

पानसिय मंज़ वुछुन छुय नो भ्युऽ'नुय;
छुय नो भ्युऽ'नुय।
पान प्रज़ऽ'नाऽ'विथ वुछतऽ' छुय न्वनुय।।
वुछतऽ' छुय न्वनुय।।०।।

अन्द्रय सुऽ'दरस ढुँगऽ' गछ़ि द्युनुय;
ढुँगऽ' गछ़ि द्युनुय।
सनिरय मंज़ऽ' गछ़ि वनि कडुनुय।।
वनि कडुनुय।।०।।

अथि ह्यथ लाल गछ़ि बुऽ'ठ खसुनुय;
बुऽ'ठ खसुनुय।
नपऽ' नपऽ' करऽ' वुन प्रनि ख़्वतऽ' प्रुऽ'नुय;
प्रनि ख़्वतऽ' प्रुऽ'नुय।।०।।

अमि प्रकाशऽ' गछि ब्रोंठ नेरुनुय;
ब्रोंठ नेरुनुय।
च़्यत् आकाशस गछ़ि फेरुनुय।।
गछ़ि फेरुनुय।।०।।

पनऽ'निस पानसिय गछ़ि तेलुनुय;
गछ़ि तेलुनुय।
पज़ि लोलऽ' अन्द्रय गुऽ'रस मेलुनुय।।
गुऽ'रस मेलुनुय।।०।।

बन्सरियो छु पान तऽ'स्य पुशऽ'रुनुय;
तऽ'स्य पुशऽ'रुनुय।
न्यष्कल बनिथिय शब्दऽ'मय बनऽ'नुय।।
शब्दऽ'मय बनऽ'नुय।।०।।

भजन नं॰ (117)

"नाम स्मरण तथा अन्तर आत्मा की धुन्नात्मक पुकार!"

अन्द्रय बोज़ छु सोज़ वज़न।
काँसि मो वन तऽ' काँसि मो वन।।
स्यज़रिय तऽ' श्वज़रिय च़िय प्राव।
अपज़िस प्यठ मऽ' भर चिकऽ' चाव।।
मो थव कन च़ऽ' लूकऽ' कथन।।०।।
दिहऽ' अभिमान सोरिय च़ऽ' त्राव।
दिह तय सम्सार मशिराव।।
मन फ्वलि च्योनुय हन हन।।०।।
कावऽ' क्रेहन्यर च़ऽ' टाव टाव त्राव।
हमसऽ' पखविय पान उफऽ'नाव।।
हमसन सीऽ'त्यी हमसिय च़ऽ' बन।।०।।
सू हम खोरि सीऽ'त्य वाय नाव।
अदऽ' वुछतऽ' पोरि मा विजऽ' वाव।।
यार पानय छु तार दिवन।।०।।
सतगुऽ'रुऽ'स सीऽ'त्यी याऽ'रिज़ च़ऽ' थाव।
तमिसुन्दुय लोल मनि गनिराव।।
सीऽ'त्य सीऽ'त्यी च़ऽ' यार थवतन।।०।।
बानन च़ऽ' वारऽ' पाऽ'ठ्य ठानऽ'थाव।
अन्द्रय हो ह्यियि अन छाव।।
सरतले हा सपदी स्वन।।०।।

अन्दर अच़ कदम ल्वत त्राव।
मनि मन्दरस च़ऽ' बर मुच़ऽ'राव।।
अन्दरय यार च़ऽ' नालऽ' रठतन।।०।।

अन्दरय वुछ छि कम कम रंग।
रंगनिय मंज़ छु यारऽ' सुन्द संग।।
अम्यी संगन च़ूरि न्युव मन।।०।।

अन्द्रिनिय च़ऽ' सीर व्यपऽ' राव।
मानसरऽ' मन्ज़य तन मन नाव।।
अन्द्रय बोज़ सुऽ'दुर छु ग्रज़न।।०।।

बन्सरियो च़ऽ' कन वारऽ' थाव।
युथ नो रोज़ि पथ काँह ग्राव।।
अमि सोज़ऽ' छनऽ' ग्रावऽ' रोज़न।।०।।

भजन नं० (118)

"नाम स्मरण आन्तरिक प्रक्रिया!"

सुलि कदम तुलमस म्य ल्वतये।
मारऽ' म्वतये हावि दीदार।।
लोलऽ' हुऽ'तये सु नूरऽ' भ्वरमुतये।।०।।

श्वास उश्वास ज़ाऽ'निथ ह्युऽ'तये।
भ्रूमध्य मन्ज़ ठीकरिथ धार।
वुछतऽ' अदऽ' मा ह्युऽ'त ज़ाँह प्वतये।।०।।

नादऽ' ब्यन्दच्ये वति द्रामुतये।
श्यामऽ' सुऽ'न्दरन दोर अवतार।।
निरञ्जन स्वरान मायि हुऽ'तये।।०।।
तऽ'मिसिऽ'न्ज़ि मायि छुस बऽ' वुऽ'लमुतये।
तति दियम सुय म्यति तार।।
रुमऽ' रुमऽ' सू बोलऽ'नोवमुतये।।०।।
लोलऽ' नारन छुस बऽ' ज़ोलमुतये।
राधा स्वामी द्रामय म्य सार।।
बालऽ' पानऽ' प्यठऽ' द्रास बनिथ म्वतये।।०।।
आरऽ' हुऽ'त लास्योसस बऽ' त्वतये।
तस पानय आव म्योन आर।।
आर आस तऽ' होवुन मुऽ'ख रुतये।।०।।
बादाम रूपऽ' रँगऽ' फ्वल छ्वतये।
रंगऽ' रंगय वुछ चमत्कार।।
मुद्धय गंऽ'ड़्य तुल कदम स्वतऽ'ये।।०।।
गुलि आफ्ताब तति फ्वलमुतये।
तऽ'थ्य मन्ज़ बिहिथ छुमय यार।।
ख्वनि तुलनस ह्यथ म्य तोर ख्वतये।।०।।
भक्ति भावय ब्रोन्ठऽ' आमुतये।
शरणागतस करनि उद्धार।।
गुऽ'रऽ' मन्त्रय छु प्रख्च्योमुतये।।०।।
बन्सरी वायान आमुतये।
बन्सरी नादऽ' आमय करार।।
बन्सरियस क्वरुन नालऽ' म्वतये।।०।।

भजन नं॰ (119)

“नाम स्मरण चमत्कारिक प्रक्रिया!”

यी न्यबर वुछ ती अन्दर वुछ।
अन्दरऽ' न्यबराऽ'य हर वुछ।।०।।

दिहऽ' अभिमान त्याऽ'गिथ वुछ।
सतगुऽ'रस पान पुशऽ'रिथ।।
सर्वव्यापक सु रहबर वुछ।।०।।

दमऽ' दमऽ' दमनायि मंज़ वुछ।
दमन बस्ति दिल दिथ।।
त्रुऽ'परिथ दारि तऽ' बर वुछ।।०।।

लोलिनि नये मंज़ वुछ।
म्वधरे स्वरऽ' वाऽ'यिथ।।
सरऽ' करिथ भवऽ'सर वुछ।।०।।

मनऽ' दर्पण नाऽ'विथ वुछ।
सोरिय अर्पण करिथ।।
भक्ति भावकुय बजर वुछ।।०।।

शुऽ'मरिथ मन नुऽ'मरिथ वुछ।
सू हम सू सुमरिथ।।
नामऽ' सुमरणकुय थज़र वुछ।।०।।

दुऽ'न दीदन मंज़ बसिथ वुछ।
मानसरऽ' ग्वतऽ' माऽ'रिथ।।
मनि मन्दरस मंज़ सुऽ'न्दर वुछ।।०।।

ज़रऽ' ज़रस व्याऽ'पिथ वुछ।
ब्रह्माण्ड़ऽ' बुर्जस खसिथ।।
ज़रस बनिथ भास्कर वुछ।।०।।

सर्वात्मऽ' भाव प्राऽ'विथ वुछ।
प्रथ तरफऽ' लोलऽ' भाऽ'गरिथ।।
स्वरूप निष्ठ बनऽ'नुक असर वुछ।।०।।

बन्सरियो सतगुऽ'र वुछ।
च़्यत् आकाशस बसिथ।।
तमि ते पर आश्च़र वुछ।।०।।

भजन नं॰ (120)

"नाम स्मरण द्वारा आत्म दीव की पूजा अर्चणा!"

तोषविऽ'नि मदनो थव म्य होश पूर।
करय पूज़्य मंज़ मनि थवतम मंजूर।।०।।

निर्मलऽ' निर्गुऽ'णऽ' निराकारो।
जय निरञ्जन म्यानि सरकारों।।
ल्वलि ल्वलि ललवथ करय गूरऽ' गूर।।०।।

सू हम सू वचुना बऽ' परयो।
श्वास उश्वासऽ' नचुना बऽ' करयो।।
म्युल बनि दुऽ'शविऽ'न्य न्वन नेरि नूर।।०।।

लोलऽ' अशि वानि गुऽ'ढ़ च़्येय बऽ' दिमयो।
नेत्रऽ' कमल च़्येय पुज़ि लागयो।।
राधा स्वामी शब्दऽ' सीऽ'त्य मलय पादऽ' जूस्य।।०।।

मनऽ'कुय अन्तर बऽ' वथरावय।
पाँच़वय प्राण अथ जरिथ थावय।।
निशि आऽ'सिथ मो ह्यम चि़य दूर।।०।।
यऽ'च़्य कालऽ' प्यठऽ' वोतुम म्य प्रारान।
धारनायि च्योनुय ध्यान धारान।।
लोलऽ' नारन क्वरमुत म्य यऽ'च़्य सूर।।०।।
जिगरस छुमा यऽ'च़्य ड़ोल च्योनुय।
त्राव सा सोरुय मलालऽ' प्रोनुय।।
दासस अथऽ' रुऽ'ट करुन छु दुऽ'स्तूर।।०।।
नूरऽ' बुथसिय लगय पाऽ'र्च पाऽ'री।
हावतम जलवऽ' पनऽ'नुय च़्वपाऽ'री।।
ज़रऽ' ज़रऽ' वुछहा बऽ' च्योनुय ज़हूर।।०।।
स्वरनय युऽ'स वज़ान छि पय दर पय।
मन म्योन करतन अथ सीऽ'त्य लय।।
अभिमानिऽ'च्य लंका म्य लरि लूर।।०।।
च्याऽ'ग्री दया यस बनि भर पूर।
चक्कर चुरासी लाख तस सूर।।
ज़न्मऽ' ज़न्मन हुंद कास म्यति ग्यूर।।०।।
बन्सरी बऽ' आमुत छुस सवाली।
मतऽ' सा करतम म्य काँह दम खाऽ'ली।।
समऽ' शान्ति रस च्यावतम यी सरूर।।०।।

भजन नं॰ (121)

"नाम स्मरण द्वारा चेतनता का उद्धार!"

ओरय सुय तऽ' योरय सुय।
अन्दऽ' वन्दऽ' सोरुय छुय।।०।।
सू च्यावुनिय छुय।
हम त्रावुनिय छुय।।
गुऽ'रऽ' शब्दऽ' तारुन त्रमिय छुय।।०।।
दुऽ'गन्यार भासुन भ्रमिय छुय।
अुऽ'गन्यारुक करुन क्रमिय छुय।
ब्यन्द स्यन्धस रलावुन छुय।।०।।
सर्वात्मऽ' भाव प्रावुन छुय।
अहम भाव त्रावुन छुय।।
सर्व व्यापक सु पानय छुय।।०।।
नामऽ' रूपिय आधार छुय।
ब्रह्माण्ड़स तान्य तार छुय।।
तमि तोर आश्चरिय छुय।।०।।
दयस कीवल मंगुन छुय।
सतगुऽ'रऽ' सुन्दिय सायि छुय।।
यति तति तार दिवऽ'वुन छुय।।०।।
ब्रह्मा विष्णो शिविय छुय।
ज़ीव ईश्वर सु पानय छुय।।
दिल तऽ' दिलबरिय छुय।।०।।

चराचर सु सोरुय छुय।
परात्परिय सु छुय।।
सत् चित् आनन्द सु छुय।।०।।

सख छु ज़िन्दऽ' मरुन छुय।
सतस प्यठ दरुन छुय।।
गुऽ'रस पान वन्दुन छुय।।०।।

दिह तऽ' दुनिया मशरुन छुय।
दयस पान पुशरुन छुय।।
बन्सरियो अदऽ' न्वनुय छुय।।०।।

भजन नं०: (122)

"नाम स्मरण मानसिक संतुलन का आधार!"

यारऽ' म्यानि गमखारऽ'।
जलवय पनुन म्य हाव।।
वुऽ'न्य मो थाव म्याऽ'न्य ग्राव।।०।।

रात दोऽ'ह छुस स्वरान,
च्योनुय बिऽ'य हा नाव।
तमिकुय छुय म्य चिकऽ'चाव।।
च्यात्रि स्मरणि सीऽ'त्य,
अन्द वाति म्योन पढ़ाव।।०।।

छ़ुसय हवालऽ' च़्येय
गम गोसऽ' म्याऽ'न्य त्राव।
असऽ'लिऽ'च वथ च़िय म्य हाव।।
दास छ़ुस बऽ' च्योनुय,
वुऽ'न्य मसा म्य मशिराव।।०।।

शरण बऽ' च़्येय आस,
च़रणन तल म्य थाव।
सारय शब्द म्य बोज़ऽ'नाव।।
पानय तार द्युन,
छ़ुय च्योनुय स्वभाव।।०।।

अन्द्रय लोलऽ'न तुऽ'न्द्रिय म्य तत्याव।
असऽ'वुन मुऽ'ख च़िय म्य हाव।।
गलि गलि शशिकलि,
अमृत म्य च्यावनाव।।०।।

मनसूर धारस प्यठ यलि खच़ाव।
मन नो डुऽ'ल तस हवाव।।
अनलहक परान,
ब्रोंठ ब्रोंठ सुय द्राव।।०।।

दासा म्य गंज़ुराव
मनसूर म्य बनाव।
सीरि असरारिय म्य भाव।।
दुय जामऽ' च़टिऽ'थिय,
अन्द्रऽ' न्यबरऽ' गाह त्राव।।०।।

वादऽ' वोत नज़दीख,
वुऽ'न्य मसा म्य प्रारऽ'नाव।
बन्सरियस अन बानन छाव।।
ओरऽ' योरऽ' दुऽ'गन्यारुक,
दूर कर तनाव।।०।।

वुऽ'न्य मो थाव म्यान्य ग्राव टाठि मदनो।।
वुऽ'न्य मसा थाव म्याऽ'न्य ग्राव।।०।।

भजन नं॰: (123)

"नाम स्मरण द्वारा अद्वैत भाव की प्राप्ति!"

ही दयालऽ' सतगुऽ'रऽ',
आनन्दऽ' कन्दय।
च्याव दीनऽ' बन्धय,
अद्वयतऽ' रस।।०।।

रस च्यथ मस बनऽ',
गलि वसऽ' वसय।
आनन्दऽ' मसय फेरि,
तोरुक ह्वस।।
म्युल बनि अज़लय,
लगि पयवन्दय।।०।।

नामऽ' स्मरणि बसि,
मंज़ मनि हरय।
रोज़ि नय अदऽ' काँह,
शूरिविय मनस।।
लोलिऽ'न रेह शोलि,
सो३हमऽ' रन्दय।।०।।

च्याजि ध्यानऽ' मात्रय।
फ्वलि म्योन वुऽ'न्दय।
बनऽ' निर्बन्धनिय,
प्रावऽ' कीवलस।।
च़रणारब्यन्दन च़्य,
जुव जान बऽ' वन्दय।।०।।

रसऽ' रसऽ' रस लगि,
बस ती बऽ' मंगय।
रोज़ि आसरऽ' च्योनिय,
खसऽ' खसऽ' बस।।
च्याजि आसरऽ' सीऽ'त्य,
फ्वलऽ' दर्दमन्दय।।०।।

रोज़ि मन प्राण लय,
समतायि रसय।
न्यष्कलि शशिकल,
च्यथिय यस तस।
हटि मनि गटऽ' यलि,
खसि रऽ'व तऽ' चन्दय।।०।।

सत् स्वरूप प्रज़लान,
रोज़ि क्षणऽ' क्षणऽ'य।
तथ्य सीऽ'त्य रोज़ऽ',
अन्दऽ' वन्दय बऽ' मस।।
छुख दया करऽ'वुन,
चि़य दया स्यन्धय।।०।।

मन फ्वलि बनसरियस,
तीज़ऽ' ज़लय।
रोज़ि सहस्रार फ्वलरिथ,
मंज़ मोजस।।
रोज़ि मस अन्दऽ' वन्दऽ',
बनि निर्द्वन्द्वय।।०।।

भजन नं०: **(124)**

"नाम स्मरण का वास्तविक स्वरूप!"

रुमऽ' रुमय ओ३म व्यचो़रुम।
गोरुम सुय तऽ' सुय व्यस्तोरुम।।०।।
वनऽ' क्याह अनऽ'ज़ान द्रास वत्ये।
खोर गुऽ'रऽ'व ज़न्म रथ्ये।।
यी प्वज़ ओस ती याद पोवुम।।०।।
अदऽ' कुनि प्यठ मन नय भ्रम्याव।
सू ज़ोन सोरुय तऽ' हम श्रम्याव।।
दुऽ'गन्यारस अुऽ'गन्यार छो़रुम।।०।।

हनि हनि तनि सूरा म्वलुम।
मुहऽ' अन्धकारिय दूर ख़्वलुम।।
सू हमस त्रमिय तोरुम।।०।।

अकिसिय ब्यन्दस थऽ'व नज़र।
तमि सीऽ'त्य गऽ'व साऽ'रिसिय स्यज़र।।
गुऽ'रऽ' कृपायि अभय पद प्रोवुम।।०।।

तनऽ' नय रूद आलम कुन्ये।
तोरऽ'कुय शेहजार फ्यूर तन्ये।।
रूगन तऽ' भूगन पथ ह्युऽ'तुम।।०।।

संशय तऽ' वसऽ' वासिय गलिम।
ओ३मकारऽ' तीज़ऽ' ज़लय छलिम।।
गुऽ'रविय सायि पनऽ'नुय त्रोवुम।।०।।

सतगुऽ'रऽ'व अथऽ' प्यठऽ' थोवहम।
अन्द्रिमिय सीरा भोवहम।।
सू पदऽ' सीऽ'त्यी मन मोरुम।।०।।

सत् स्वरूपस पथ म्वत बन्यास।
तमि सीऽ'त्यी ख़्वल सोर तलऽ'वास।।
सतगुऽ'रविय ओरय म्य योरुम।।०।।

गुऽ'रसिय पथ क्वर पान फिदा।
अदऽ' नय रूद सुय ज़ांह जुदा।।
नपऽ' नपय तनय मन नोवुम।।०।।

बन्सरी नय अन्द्रिम छ़टिहे।
छुऽ'पि हिऽ'न्दे सीऽ'त्यी ज़पिहे।।
सोरिय सुय तऽ' बुय केंह नऽ' ज़ोनुम।।०।।

भजन नं०: (125)

“नाम स्मरण की स्वछन्दता!”

दमऽ' दमय राऽ'छ्य करतऽ' दमन।
युथ ना जाय रोज़ि कुनि ते गमन।।०।।
गाऽ'फिल मऽ' बन गफलत चि़य त्राव।
यिम नो काऽ'किलन हिऽ'न्द छि पढ़ाव।।
सतगुऽ'रऽ' च़रणन रोज़ नमन।।०।।

ज़ेरि ज़ेरे शेरि मंज़ शेर प्राण।
गुऽ'रऽ' शब्दय सीऽ'त्य रोज़ नावान।।
कतरऽ' कतरय सुऽ'दुर छु समन।।०।।
च़्यत् बुऽ'द्ध मन करतो अर्पण।
सतगुऽ'रन पनऽ'न्यन रात द्यन।।
गुऽ'रऽ' सायि सीऽ'त्य मन छुनऽ' भ्रमन।।०।।

रायि ह्यस कर ग्राय युथ नऽ' लग्यस।
गुऽ'रऽ' माय भरिथिय वात पयस।।
अभय पदऽ' सीऽ'त्य गछ़ि लय मन।।०।।
आसन त्राव वासन च़ऽ' श्वज़ऽ'राव।
श्वासन मंज़ प्रणव च़ऽ' प्रख्वाव।।
प्रणविऽ'चि ज़ेरि ज़ेरि मन छु शमन।।०।।

गुऽ'रऽ' कृपा यस तस क्याह छु गम।
तस पानय वज़ान छु सू हम।।
सतगुऽ'रऽ' दीश फ्वलवुन छु चमन।।०।।

सत् स्वरूपस सीऽ'त्यी थव ज़ान।
युथ ना ओरऽ' योरऽ' हटि कुन ते ध्यान।।
संकल्पऽ' वैरागऽ' हम छु हमन।।०।।

लच्छऽ' नाऽ'विस लच्छ रंग छि भासान।
नतऽ' रंग तस कुनिय छु आसान।।
पच्छ़ कुस करि वनख च़ऽ' कमन।।०।।

सोंत क्युथ च़ाव यस युथ हो द्राव।
यिह्य कथ बोज़ दयि सिऽन्द छि पढ़ाव।।
यिमन युथ भाव भासान त्युथ तिमन।।०।।

बन्सरियो सरऽ' कर पनुन पान।
ज़िन्दय हो प्रावुन छु निर्वाण।।
प्रथ शयि मंज़िय राम छु रमण।।०।।

भजन नं॰: **(126)**

"नाम स्मरण का अमली स्वरूप!"

नवि न्वुय न्वविय छु नवान,
वुछतऽ' प्राऽ'निस छा कांह छिऽ'कान।
प्रानि मंज़य न्वुय छु ऊऽ'पदान।।
ला जवाबस करि क्याह जवाब।।०।।

न्वुय छु नवान प्रोनुय छु प्रानान,
समयुक स्वभाव यी छु आसान।
क्याह छु नवान क्याह छु प्रानान।।
अमि ज़ाऽन्य सीऽ'त्य म्वकलान क्याह हिसाब।।०।।

धारऽ' होरय संसार छु आसान,
युस यस धारान सु तस होरान।
लूभवुन भाव यि छु शूभायिमान।।
शुऽ'द्ध चेतनायि हुंद क्याह शबाब।।०।।

स्यन्धऽ' मंज़य ब्यन्दिय छु नेरान,
वुछतऽ' ब्यन्द अदऽ' स्यन्धस छु रलान।
ब्यन्द स्यन्धिऽ'च्य प्राविंन्य छि पाऽ'स्यज़ान।।
यिह्य ज़ान छय क्याह लूभि लुबाब।।०।।

अमलि सीऽ'त्य युस अलिम छु प्रज़लान,
सुय अलिम छु पज़रुकुय ज्ञान।
नतऽ' शिवस सीऽ'त्यी छु शेतान।।
युस अज़ाबन हुंद क्याह छु अज़ाब।।०।।

गुऽ'रऽ' व्यज़ सीऽ'त्य युऽ'स करनऽ' यिवान,
स्वय अमल प्रख्वार छि हावान।
तमिकुय फल जल जल छु पपान।।
युस पपऽ'नुय छु क्याह सवाब।।०।।

मनि मन्दरस ताऽ'र्य खुलऽ' सपदान,
ताऽ'र तारस तरनस नऽ' लगान।
म्युल शिवस तऽ' शक्ति छु बनान।।
युथ ज़लस सीऽ'त्यी क्याह हुबाब।।०।।

सुय थावर ज़ंगम छु आसान,
सुय चराचर च्वपाऽ'रय छु नचान।
युस सनान तमिऽ'सिय छु ननान।।
सुय नवाबन हुन्द क्याह नवाब।।०।।

बन्सरियो पज़रिऽ'च यिहय ज़ान,
ब.ने करनऽ' सीऽ'त्यी स्वच़्छन्दऽ' ध्यान।
अमि ध्यानय अनहद छु वुज़ान।।
ज़न छु वज़ान रस्युल क्याह रऽ'बाब।।०।।

भजन नं॰ (127)

"नाम स्मरण द्वारा अगम तथा अन्नाम तक पहुँच!"

प्रणऽ'विऽ'चि ज़ेरि ज़ेरि,
खसि आत्मिऽ'चि हेरि।
नेरि न्वनिय स्वप्रकाश।।
नेरि न्वनिय स्वप्रकाश।।०।।

ब्रह्माण्ड़िऽ'चि बेरि,
नेरि फेरि प्राण शेरि।
शेरि मन्ज़िय नेरि वाश।।
शेरि मन्ज़िय नेरि वाश।।०।।

गरि गरि दय स्वरि,
ज़िन्दऽ' पानय मरि।
वरि तस ओरय दय।।
वरि तस ओरय दय।।०।।

ज़रि ज़रि सू जरि,
सूहस हम मरि।
हरि तस सोरुय भय।।
हरि तस सोरुय भय।।०।।

लरि लरि चूनि जरि,
मन्ज़ मरि मनि मरि।
नेरि चम्कऽ' चम्किऽ'य साफ।।
नेरि चम्कऽ' चम्किऽ'य साफ।।०।।

वारि वारि तस छ़ारि,
पतिमे प्यारि प्रारि।
ढ़ेशि मुऽ'यि मुऽ'यि नाराण।।
ढ़ेशि मुऽ'यि मुऽ'यि नाराण।।०।।

धारि धारि अुऽ'श हारि,
लोलऽ' हुऽ'तिय लारि।
करि कुस तस सीऽ'त्य मान।।
करि कुस तस सीऽ'त्य मान।।०।।

भरि लोल लो लरि,
करनऽ' अपोर तरि।
मरि नो ज़ांह अदऽ' सुय।।
मरि नो ज़ांह अदऽ' सुय।।०।।

करि पान तऽ'स्य हवालऽ',
रछ़ि सुय निशि ज़वालऽ'।
ज़ाऽ'निथ सोरिय सुय।।
ज़ाऽ'निथ सोरिय सुय।।०।।

करि सूर च़्यतस,
दरि गुऽ'रऽ' गतस।
सांऽ'पनस पाफ पुऽ'ण्य माफ।।
सांऽ'पनस पाफ पुऽ'ण्य माफ।।०।।

शिवऽ' नाव मनि धरि,
दय लभि पननि घरि।
तरि सुय सरि बाज़ार।।
तरि सुय सरि बाज़ार।।०।।

स्वरनऽ' रुऽ'स्तुय स्वरि,
इन्द्रय लय करि।
बनि शिविय आधार।।
बनि शिविय आधार।।०।।

कालऽ' भय तस हरि,
यम ते तस डरि।
नेरि खालिऽ'य त्युथ कांह।।
नेरि खालिऽ'य त्युथ कांह।।०।।

गुऽ'रऽ' शब्दस सवारि,
खसि प्यठ ताकऽ' दारि।
गारि तस ओरय यार।।
गारि तस ओरय यार।।०।।

नाव तस कृपा निधान,
भक्त्यन छु सुय रछान।
अदऽ' क्याज़ि रिऽ'वय बिऽ'य।।
अदऽ' क्याज़ि रिऽ'वय बिऽ'य।।०।।

तनऽ' मनऽ' कन धारि,
उद्धऽ' गीतिय सारि।
छावि बन्सरियो बहार।।
छावि बन्सरियो बहार।।०।।

भजन नं॰: (128)

"नाम स्मरण द्वारा अजपा जाप की पहचान!"

हा तय हू यतिथिय रल्याव।।
आत्मऽ' दीव ततिथिय प्रख्ट्याव।।
सू हम स्वर तऽ' भ्रम मिट्याव।
शब्दिऽ'नि नयि मनकऽ' प्रज़ल्याव।।
पाँच़न नावन कुनिय म्वच़्याःव।।०।।

अनहद नादिय ग्रज़्याव।
हंगऽ' तय मंगऽ' मन पच़्याव।।
कैवल्य भाविय सज़्याव।।०।।
पर तऽ' पान कुनिय व्यन्ज़ाव।
सार वस्तु केन्ह अथि आव।।
सतगुऽ'र श्रेह मनि गन्याव।।०।।

गुऽ'रऽ' भावऽ'नायि त्रोव प्रभाव।
अज़पा ज़पऽ'कुय च़्यून स्वभाव।।
अंहकारस सूर सपद्याव।।०।।
गुऽ'रविय ओरय भ्वर भाव।
स्वरनऽ' रुऽ'स्तिय स्वरनय आव।।
गुऽ'रऽ' लोलय लोल उपद्याव।।०।।

गुऽ'रय पयवन्दिय पप्याव।
शेरि हुन्दुय शेर ज़ेर आव।।
च़्यत् तऽ' च़ीतन यकजा सम्याव।।०।।

अदऽ' नय रूद कुनिकुय अभाव।
वुऽ'न्दि हुन्दिय तमन्ना द्राव।।
बन्सरियस सतगुऽ'र टोठ्याव।।०।।

'राधा स्वामी सहाय'
"ओ३म नमो गुरुवे सरस्वती रूपाये!"

ज्ञान परक आध्यात्मिक निर्गुण भक्ति धारा की रचनाएँ

भजन नं॰: (129) से लेकर
भजन नं॰: (149) तक।

भजन नं० (129)

"पूर्ण रूप से परमात्मा में विलीन होने के लिए प्रार्थना!"

च़ऽ' छुख पानऽ' पूर्ण,
अपूर्ण वनय बऽ' क्याह।
म्य पुर्णस मंज़ लय।।
करतम साऽ' लालो।।०।।

च़ऽ' छुख परमीश्वर,
च़ऽ' छुख साऽ'रिसिय सर।
म्यते कर मुनऽ'वर।।
पानय हा लालो।।०।।

च़ऽ' छुख शुऽ'द्ध च़ीतन,
च़ऽ' छुख आनन्द गण।
म्यते रोऽ'ट दामन।।
च्योनुय हा लालो।।०।।

च़ऽ' छुख भक्ति वत्सल,
छि भक्त्यन च्याऽ'ग्य कल।
म्यते भक्ती बल।।
दितम च़िय हा लालो।।०।।

च़ऽ' छुख करुणाकर,
कासान आऽ'स्यत्यन च़ऽ' ज़र।
म्यवय क्याह बऽ' बजर।।
च्योनुय हा लालो।।०।।

चऽ' छुख पानऽ' निर्मल,
म्य छल वासनायि मल।
स्वरय युथ बऽ' कीवल।।
नाव च्योन हा लालो।।०।।

चऽ' छुख शक्ति नाथिय,
म्य कर शक्ति पाथिय।
नतय क्याह छि बाथिय।।
म्याऽ'नी हा लालो।।०।।

वुछिथ च्याऽ'ञी रंग,
गछ़ान अकलिय छिऽ'दंग।
छु च्योन सोरुय प्रपंच।।
आश्चर हा लालो।।०।।

वुछिथ रऽ'व तय चन्द,
छु सोरुय च्योन फन्द।
छु च्योनुये प्रचण्ड़।।
ब्रह्माण्ड़स हा लालो।।०।।

करय गथ वन्दय रथ,
म्य छय बस च्याऽ'ञ सथ।
म्य छुय तलब वुछहथ।।
सन्मुऽ'ख हा लालो।।०।।

वनय क्याह मंगय क्याह,
ह्यमय क्याह दिमय क्याह।
म्य पनऽ'न्ये रंगय क्याह।।
रंगऽ'नाव हा लालो।।०।।

चऽ' छुख सारिकुय सार,
बऽ' छुस च्योन तलबगार।
म्य बसं छय दरकार।।
मेहर च्याऽ'म्य हा लालो।।०।।

चऽ' छुख शब्दऽ' सागर,
चऽ' छुख गाशकुय घर।
छु बन्यरियस ति शर।।
अमिकुस हा लालो।।०।।

भनज नं० **(130)**

"मस्ताना बनने के लक्षण तथा वास्तविक मस्तानों की परिभाषा!"

जानानऽ' सीऽ'त्य सीऽ'त्यी ह्यतन।
मस्तानऽ' बन मस्तानऽ' बन।।०।।
मस्तानऽ' बनुन गव युतिय।
दयि सिऽ'न्ज़ि वति नेरुन म्वतिय।।
ल्वतिय थवुन कन आलवन।।०।।

मस्तानऽ' दयि नावऽ' सीऽ'त्य फ्वली।
संशय तिमन साऽ'री चली।।
वली ना तिम माया मुहन।।०।।
मस्तानऽ' मस च्यथ गयि कली।
पनऽ'न्ये कौलऽ' तिम नो ड़ली।।
फ्वली अदय तिम पम ज़न।।०।।

मस्तानऽ' फेरान छिय च़्वपाऽ'रय।
कर करि साह्यब पनिन याऽ'र्य।।
पाऽ'र्य पाऽ'र्य लगान छिऽ'स कदमन।।०।।

मस्तानऽ' मऽ'त्य मऽ'त्य छि लारान।
तस पथ गथ छिऽ'य मारान।।
प्रारान छिऽ' तोरक्यन नादन।।०।।

मस्तानऽ' तिमय छि असली।
तिऽ'मनिय वनान छिय महाबली।।
फर्शऽ' प्यठय यिम अर्शस वुछन।।०।।

दुनिया वुछतऽ' क्याह छु नदुऽ'रिय।
तऽ'म्य ज़ोंन यऽ'म्य दयि नाव स्वरिय।।
तऽ'थ्य सीऽ'त्यी रूद रात तऽ' द्यन।।०।।

दुनिया वुछतऽ' क्याह छु अुऽ'दुरिय।
दयि नाविय योत छु म्वधुरिय।।
दयि लोलऽ' सीऽ'त्य मन भरतन।।०।।

दुनिया मंज़ऽ' क्याह छु लारुनिय।
कथ प्यठ अति छु पान मारुनिय।।
अमि ख्वतय मन चि़य मारतन।।०।।

दुनिया आऽ'खिऽ'र छु नश्वर।
तगिये अथ कुन फिऽ'र च़ऽ' थर।।
अमि मंज़य सरऽ' पान करतन।।०।।

गुऽ'रऽ' शब्दस चि़य लोल भर।
गुऽ'रय चरणन हुन्द ध्यान च़ऽ' घर।।
बन्सरी नादऽ' मन च़ऽ' भरतन।।०।।

भजन नं॰: (131)

"निर्गुण ब्रह्म को साष्टांग प्रणाम!"

साष्टाँग दंढवत् प्रणामय।।
गुऽ'णातीतस कस्यामय।।०।।
यस काँह क्राम नऽ' ढ़ेश्यामय।
तऽ'स्य आर आयामय।।
गुऽ'रय भावऽ'नायि श्रेह वुज़ामय।।०।।

बालऽ' भावय छ़ाँज्यामय।
गुऽ'रन हाल भाव्यामय।।
तिमव अथऽ' शेरि थाव्यामय।।०।।
गुऽ'रऽ' शब्दस लोल भस्यामय।
पज़ि मनऽ' तन दिच्यामय।।
मनस मलऽ'चार पाज़्यामय।।०।।

सीनऽ' सिपर च्यास्यामय।
भवऽ'सरऽ' तार लभ्यामय।।
तऽ'स्य पान पुशऽ'राव्यामय।।०।।
गुऽ'रय व्यज़ पूर्वक गस्यामय।
गऽ'स्य ग'स्य सुऽ'म्बस्यामय।।
ज़ून ढ़बि चूनि जस्यामय।।०।।

अच्छ़ऽ' पोश वथऽ'राव्यामय।
लच्छ़ऽ'नोव ललऽ'व्यामय।।
गच्छ़ऽ' कुठि पाऽ'राव्यामय।।०।।

गुऽ'रऽ' लोलिय ब्योल वव्यामय।
गुऽ'रऽ' मंत्रऽ' सगऽ'व्यामय।।
गुऽ'रऽ' तीज़िय फल पप्यामय।।० ।।

लोलऽ' नारऽ' रेह तेज़्यामय।
सीरऽ' वथ ज़ान्यामय।।
ज़ीरऽ' बमऽु त्रम तास्यामय।।० ।।

रसऽ' रसऽ' मस च्याव्यामय।
मन ह्यसऽ' फिरऽ'व्यामय।।
भवऽ' स्यन्धि सुम शेस्यामय।।० ।।

ह्थ—कमल फ्वलऽ'राव्यामय।
सत् स्वरूप छाव्यामय।।
च़्यत् आकाशस मस्यामय।।० ।।

सोर संकल्प त्राव्यामय।
संतोष प्राव्यामय।।
आशऽ' पाशऽ' त्रुऽ'पराव्यामय।।० ।।

राधा स्वामी रामऽ' नामय।
बन्सरियस दस्यामय।।
ओ३मकारऽ' पद नाऽ'प्यामय।।० ।।

भजन नं॰ : (132)

'ईश्वरी सत्ता की अष्ट सिद्वियाँ साधक के वश में, परन्तु माया तथा तृष्णा आध्यात्मिक मार्ग में बाधक बन सकते है।'

पान प्रज़ऽ'नाव दय न्वन छुये,
यी चऽ' मंगहस ती सु दिये।
कोना मंगहस दर्शुन सु दिये।।
पूरऽ' पाऽ'ठी सन्मुऽ'ख यिये।।०।।
तस यि द्युन छुय ती मंगऽ'नावी।
पानस ताऽ'न्य अदऽ' कति सुथावी।।
मायायि पर्दऽ' वुछ ठुऽ'र छुये।।०।।
पर्दऽ' चटिऽ'थिऽ'य मर्द न्वन नेरी।
अदऽ' नो ज़ांह सु प्वत फेरी।।
वतऽ' शेरान भक्त्यन सु छुये।।०।।
आत्मऽ' ठोकुर रोज़ न्यथ पूज़ान।
मनऽ'कुय नाग अदऽ' रोज़ि वुज़ान।।
वुज़िनि मंज़ वुज़ऽ'नावुन छुये।।०।।
मन फुटरिथ नेरि न्वन मूलिय।
सुय मूलिय युस छुय अतूलिय।।
मूलऽ' तलय कुल न्वन छुये।।०।।
माऽ'लिकि कुल छु सुय कुलिय।
कुलि प्यठय वुऽ'पदान छि गुलिय।।
गुलनिऽ'य मंज़ बसिथ सु छुये।।०।।

क्षमा करऽ'वुन सु छु अपराधन।
नतऽ' निधानन मंज़ छा कथ सासन।।
खासन हिऽ'न्ज़ कथ तोर छये।।०।।

मोज तमिसुन्द सोर ज़ानानिऽ'य।
संत तऽ'थ्य प्यठ छिय रोज़ानिऽ'य।।
निष्कल भाव तिमन छुये।।०।।

निर्मल सन्त छिय निर्बन्धन।
तिऽ'हिऽ'न्दि सीऽ'त्य साऽ'री न्याय छि अन्दन।।
वुऽ'न दि तस न्वन सु छुये।।०।।

भक्तिवत्सल सु छु आसानिऽ'य।
भक्त्यन हिऽ'न्द खुर्य छु कासानिऽ'य।।
बन्सरियो यच्छ़ पच्छ़ च़्य छऽ'ये।।०।।

भजन नं० (133)

"ईश्वरी सत्ता के साथ एकीकरण की भावना!"

सऽ'न्य ताऽ'य वाऽ'गिऽ'न्य,
वऽ'न्य म्य दिच़ाम,
यस हनि हनि ताऽ'य।
सुय आम वन्ये मन्ज़ हय।।
पनऽ'नि, मन्ये म्य ताऽ'य।।०।।

ज़ल ओस कुनिय भ्युऽ'न भ्युऽ'न,
भोस, मंज़ कतरन ताऽ'य।
प्रेयमिऽ'कि जोशऽ' सीऽ'त्य म्युल,
सपद्यव ब्ययि कतरन ताऽ'य।
ज़रस तऽ' ज़रस वुछ सु बसिथ।।
निशि पानस ताऽ'य।।०।।

न्वन ढ़ँयूठ कीवल नपऽ' नपय,
मनि आऽ'नस ताऽ'य।
चि़ऽ'य बिऽ'य दुय गऽ'ज्य, खय च़ऽ'ज्य,
पय ल्वभ यारस ताऽ'य।
ओरऽ' योरऽ' सुय द्राव द्युत म्य।।
हाऽ'विथ, सतगुऽ'रऽ'व ताऽ'य।।०।।

दीदार होवुन गाह त्रोवुन,
मंज़ दीदन ताऽ'य।
तन मन लय गव यलि साँऽ'पिऽ'न्य,
त्रय द्वार बन्द ताऽ'य।
सोर द्राव सू हम योर गुऽ'रऽ'व।।
ओरय म्य ताऽ'य।।०।।

ह्यरि ब्वनऽ' अन्दऽ' वन्दऽ',
मुच़रनऽ' आयि साऽ'री ताऽ'स्य ताऽ'य।
सुय बिऽ'य बिऽ'य सुय रूद म्वच़ान,
सुय योत म्य ताऽ'य।
सू हमऽ' शब्दिऽ'कि ज़ोरऽ' शोरऽ'।।
सीऽ'त्य सपद्यव स्वन ताऽ'य।।०।।

हर सातऽ' हर विऽ'ज़ि, छुस बऽ',
धारान सतगुऽ'रऽ' ध्यान ताऽ'य।
सत् च़्यत् आनन्दऽ' कन्दऽ' रूपय,
सु छु आसान ताऽ'य।
निर्गुऽ'णऽ' निर्द्वन्द्वऽ' रूपऽ' बसान।।
प्रथ तरफऽ' सु ताऽ'य।।०।।

सुय ओस सुय छु सुय रोज़्यम,
अन्दऽ' वन्दऽ' म्य ताऽ'य।
इन्द्रय चूरन सूर क्वरनम तऽ'म्य,
बन्दऽ' बन्दऽ' ताऽ'य।
काम क्रूध लूभ मुह मद गोलनम।।
छुस शर्मन्दऽ' ताऽ'य।।०।।

बिऽ'य छुस फाऽ'नी सुय म्य बासाऽ'नी प्रथ ज़रऽ' ताऽ'य,
तमिसुन्द दूर्यर कुऽ'न्य नो ज़रऽ' बो अख ज़रऽ' ताऽ'य।
तऽ'मि सिऽ'न्ज़िऽ' आशऽ' सीऽ'त्य गाश।।
आव मनि बन्सरियस ताऽ'य।।०।।

भजन नं० (134)

"ओ३मकार का स्वरूप तथा इसका मानव जीवन के साथ सम्बन्ध!"

यि छु स्वप्ना सोरुय सम्सार।
अति रोज़ुन छु सदा बेदार।।०।।

यि करान ति करान सोरुय छु दय।
पानस ताऽ'न्य कांह कथ नो छय।।
अदऽ' कथ प्यठ छु गछुन गिरिफ्तार।।०।।

अविद्यायि किऽ'न्य द्विविदा छि भासान।
नतऽ' ओरऽ' योरऽ' सोर कुन छु नाराण।।
अद्वऽ'यतुक अति करुन छु व्यवहार।।०।।

यि छु स्वप्ना ती छय जाग्रत।
सुष्पती हिऽ'न्ज़ हिऽ'श थविऽ'न्य छि वृत।।
तुरियायि हिऽ'न्द त्र्यनवय यिम छि कार।।०।।

ओ३मकारस छि यिमय च़ोर पाद।
सरऽ' करतख तऽ' अदऽ' दूर गछ़ि व्याध।।
मात्रा ब्ययि अकार उकार मकार।।०।।

अन्द्रय वुछ च़न्द्रम छु ज़ोतान।
अऽ'थ्य सीऽ'त्य लय कर मन बुऽ'द्ध तऽ' प्राण।।
आत्मऽ' प्रकाश युऽ'हय ब्रह्म छु साकार।।०।।

सत् स्वरूपस अऽ'थ्य करिऽ'न्य छि गथ।
तुरिया तीतिऽ'च्य छ़ांडिऽ'न्य छि वथ।।
सत् चित् आनन्दुक याऽ'हय छु आधार।।०।।

उद्यूगी बनिथ अति छु रोज़ुन।
उद्धऽ' गीथिय क्षणऽ' क्षणऽ' छु बोज़ुन।।
शान्त च़्यत् रूज़िथ बनुन छु निर्विकार।।०।।
च़्यत् फुर्णा गछ़ि गछ़नी बन्द।
निर्विकल्प बनिथ बनुन छु निर्द्वन्द्व।।
समऽ' शान्ति अमृत च्वन छु दरकार।।०।।
रिन्दय बनुन छुय मन पनुन जीत।
शिविय छु आसऽ'वुन त्रिगुणातीत।।
कल्याणुक हो युऽ'हय छु भण्डार।।०।।
बन्सरियो माज़स मो माज़।
अन्द्रय हो ननान सोरुय छु राज़।।
द्धुऽ'न दीदन बनान न्वन छु दीदार।।०।।

भजन नं०: (135)

"मनुष्य जन्म सर्व श्रेष्ठ होने के नाते जीवात्मा को सुधारने की प्ररेणा!"

पानो कथ छुख छ़टुँ मारानो।
त्रटऽ' बूज़िथ ति छुखना सुधरानो।।०।।

काऽ'चाह ज़ीवऽ' ज़ाऽ'च्य छुख चऽ' वुछानो।
इमनिय मंज़ थ्वद चऽ' इन्सानो।।
युथ ज़न्म कोना छुख रथि खारानो।।०।।
कायिनातस मंज़ कीऽ'त्य इन्सानो।
काँह काँसि ह्युव छा आसानो।।
यिम शक्लऽ' कुस नक्काश छु गरानो।।०।।
सम्सारस मंज़ काऽ'त्याह यिवानो।
योरऽ' नेरान अथऽ' हावानो।।
दयि नाविय योत अति छु लारानो।।०।।
च्याञि सीऽ'त्यी वनतऽ' क्याह छु सपदानो।
नाहकय छुख गछ़ान परेशानो।।
कोना तस दयस छुख पान पुशरानो।।०।।
पानय तारऽ'वुन छु तार दिवानो।
हाऽ'न्ज़ो नाव छय बहानो।।
अपज़ुय आऽ'सिथ प्वज़ च्य भासानो।।०।।
दमऽ' दमऽ' दमन ह्यस युस थवानो।
तस छुनऽ' काँह भयि रोज़ानो।।
तस साऽ'री संशय छिय मिटानो।।०।।

ज़िन्दय छु परमऽ' पद सुय प्रावानो।
यस दय रोज़ान मेहरबानो।।
अन्द्री छु गगनस सुय साऽ'ल करानो।।०।।
सतगुऽ'र छु आसवुन साहेबानो।
भक्त्यन तारऽ'वुन छु भगवानो।।
संकल्पन करऽ'वुन तिमन छु फानो।।०।।
दयि सिऽ'न्ज़िय प्राऽ'विऽ'न छि पूरऽ' ज़ानो।
अदऽ' प्रावख चि़य निर्वाणो।।
सतगुऽ'रस रूऽ'स छनऽ' सुऽ'य बनानो।।०।।
बन्सरियो तिमय छि बऽड़्य भाग्यवानो।
मेलान यिमन गुऽ'र दयावानो।।
शीतल कोमल ब्ययि ज्ञानऽ'वानो।।०।।

भजन नं॰ (136)

"भक्ती की श्रेष्ठता इसके लक्षण तथा साधन!"

वनय क्याह छु कोताह थज़र भक्ती।
छु प्रावान ज़ीव अमि सीऽ'त्य मुक्ती।।०।।
वनिमिऽ'त्य छि अमिकी आऽ'ठ साधन।
बनन यस तस कमिच्यी छि लादन।।
यिमन मंज़ छु ग्वड़न्युकुय सत् संग।
बनन यस खसन तस तोरकुय छु रंग।।०।।
दोयुम गनऽ'नुय गछ़ि अख दयि लोल।
गन्यव तस तस यऽ'म्य ज़्वक मधुर चो़ल।।०।।

त्रेयिम सतगुऽ'रऽ' सुन्दिऽ'य उपदीश।
बनन यस हरनं तस छिय कुल कलीश।।०।।
चूरिम सतगुऽ'र सिऽ'न्द सिविऽ'न पाद।
तमी सीऽ'त्यन मिटान साऽ'रिय छि व्याध।।०।।
पीऽ'न्चिऽ'म छु सतगुऽ'रऽ' सुन्द बनुन प्रसाद।
छु धर्मव तऽ' कर्मव निशि सु आज़ाद।।०।।
शयिम लगनी गछ़ि सहज़ऽ' समाध।
तमी सीऽ'त्यन चलान साऽ'रिय उपाध।।०।।
सतिम बोज़ुन सत् नाम दुऽ'ह तऽ' रात।
भक्त्यन अमि रुऽ'स छुनऽ' काँह ति सात।।०।।
अष्टुँ स्यद्धियन हिऽ'न्ज़ त्राविऽ'न्य छि कल।
छु भक्त्यन पानय ज़न्म सफल।।०।।
भक्त्यन छि साऽ'री पाप शाप माफ।
हरान ज़न्मन हिऽ'न्द छ़िख संताप।।०।।
छि दुर्लभ बनिन भक्ती हिऽ'न्ज़ अमल।
छि भक्ती पुऽ'न्य कर्मन हिऽ'न्द फल।।०।।
दयस मंग बन्सरियो भक्ति भाव।
छु ज़ीवन मुऽ'क्तिय भक्त्यन हा नाव।।०।।

भजन नं०: (137)

"निद्यासन द्वारा ईश्वरी सत्ता का बोध!"

च़्यत्कुय चे़नुन छु ज़ाऽ'व्यजार मेनुन,
ज़े़नुन मनिय छु हो।
दयि लोलऽ' रंगय छु मन रंगऽ'नावुन।।
त्रावुन विक्षीप मल छु हो।।०।।
सत् स्वरूपस सीऽ'त्य विज़ि विज़ि छु खेलुन,
मेलुन दयस छु हो।
यमि योर मन नय छु तमि तोर वातुन।।
ज़ातुन संगम छु हो।।०।।
मानसरऽ' मंज़य तन मन छु नावुन,
उफऽ'नावुन प्राण छु हो।
प्राण सन्ध करिऽ'न ढुंगल छु लागुन।।
त्यागुन राग द्वेष छु हो।।०।।
अति नय माज़स ज़ाँह ते छु माज़ुन,
पाज़ुन सुऽ'धुर छु हो।
रछ़ि रछ़ि सोरुय पान मदऽ' छु वालुन।।
गालुन अहम छु हो।।०।।
दयि टाठ्यन सीऽ'त्य दोह द्यन छु भरुन,
तरुन भवऽ'सरऽ' छु हो।
निर्वासन बनिथ गुऽ'रऽ' ध्यान छु धारुन।।
भरुन आनन्द छु हो।।०।।

सतगुऽ'रऽ' दीशस ख्याल छु सोज़ुन,
रोज़ुन ज़ाऽ'गिथ छु हो।
सतगुऽ'रऽ' वचुन दयि सुंद छु पचुन।।
नचुन अन्दऽ' वन्दऽ' छु हो।।०।।

रुम्ऽ' रुमऽ' पानय ओ३म छु उश्चारुन,
लारुन तऽ'स्य पतऽ' छु हो।
सतगुऽ'रऽ' वाक्यन वारऽ' कन छु धारुन।।
तारुन पानिय छु हो।।०।।

दमन मंज़िय हम छु प्रज़ऽ'नावुन,
छावुन तीज़ऽ' ज़ल छु हो।
ग्वतऽ' ग्वतऽ' मारुन हमसऽ' नाद छु बोज़ुन।।
रोज़ुन शिहलिथ छु हो।।०।।

समऽ' भाव प्रावुन पान छु पुशऽ'रावुन,
मशिरावुन दिह छु हो।
भय अदऽ' नऽ' रोज़ान छु कालिऽ'नि जेलुन।
तेलुन पानसिय छु हो।।०।।

हठऽ' यूग त्रावुन सहजऽ' यूग छु प्रावुन,
भावऽ'वुन सतगुऽ'रऽ' छु हो।
बन्सरियो न्यथ गुऽ'रऽ' वाक् छु पालुन।।
च़ालुन यि लोलऽ'नार छु हो।।०।।

भजन नं॰: (138)

“ईकोहम बहुस्याम! भाव का प्रकटीकरण!”

रंग छु कुनिय द्रायि कीऽ'त्य ननिये।
साज़ऽ' मंज़ऽ' द्रायि सोज़ भ्युऽ'न भ्युऽ'नये।।०।।
साज़न्दर छु दय पाऽ'न्य पानय।
रंगऽ' रंगऽ' सोज़ उपदावानय।।
यी तस तगान कांह नऽ' ज़ानऽ'वुनये।।०।।
रंग तमिसिऽ'न्द भ्युऽ'न छि भासानाऽ'य।
ज़ान साऽ'नी आसऽ'विऽ'न्य बहानाऽ'य।।
राधऽ' ज़ेठऽ'विऽ'न्य तऽ' होन्ज़ऽ' छुऽ'टविऽ'नये।।०।।
उस्तादि काऽ'मिल छु ननि वानाऽ'य।
ज़ान पनऽ'नी ज़ानऽ' नावानाऽ'य।।
वुऽ'न दिथिऽ'य अुऽ'न छु कासऽ' वुनये।।०।।
भक्ति भावय सुय टोठानाऽ'य।
फुटऽ'मिऽ'तसिय सुय छु वाटानाऽ'य।।
गुऽ'रऽ' मुऽ'खय छु ह्यछऽ'नाववुनये।।०।।
पज़ि मनऽ' यलि लगि यारानाऽ'य।
पानसिऽ'य मंज़ न्वन छु नेरानाऽ'य।।
गुऽ'रऽ' मंत्रय छु अथि युवऽ'वुनये।।०।।
हाऽ'ज्य भावन्या मंज़्य छि चम्कानाऽ'य।
समाऽ'ज़्य सुऽ'ख प्रावऽ'नावानाऽ'य।।
पानस ताऽ'न्य अदऽ' नय थावऽ'वुनये।।०।।

माऽ'लिऽ'कि कुल साह्यब छु पानाऽ'य।
राज़ तमिसिऽ'न्दी गीऽ'ढ़च आसानाऽ'य।।
अकि जलवय कुन्य छु करऽ'वुनये।।०।।
नपऽ' नपय छुऽ'पऽ' सपदानाऽ'य।
छुऽ'पि हिऽ'न्दी आलम ग्यवानाऽ'य।।
अति छुनऽ' काँसि केंह फोरऽ'वुनये।।०।।
मेवऽ' कुल यलि भरनऽ' यिवानाऽ'य।
सर नुऽ'मरिथ सु छु रोज़ानाऽ'य।।
कुनिकुय परऽ'वाय नऽ' भरऽ' वुनिये।।०।।
अति शर्मन्दगी याऽ'च्य ननानाऽ'य।
बन्सरी सदा सर छु नुऽ'मरानाऽ'य।।
शरणागतन सु छु वरऽ'वुनये।।०।।

भजन नं० **(139)**

"ईश्वरी सत्ता का संतो के संग में निवास!"

अंगऽ' कोमल रंगऽ' भ्युऽ'न छु कुनये।
संगऽ' संतन हुंद छु आसऽ'वुनये।।
चंगऽ' सारंगऽ' मृदंगऽ' वायऽ'वुनये।
कमि बंगऽ' सोज़ बोज़ऽ'नावऽ'वुनये।।
हंगऽ' मंगऽ' भक्त्यन छु टोठऽ'वुनये।।०।।
क्वंगऽ' कोफूरऽ' रंगऽ' नावऽ'वुनये।
तीज़ऽ' गंगऽ' ज़लऽ' मन नावऽ' वुनये।।
पारसंग नऽ' कुनिकुय छु थावऽ'वुनये।।०।।

सूहंगऽ' शब्दऽ' भंगऽ' च्यावऽ'वुनये।
तमि भंगऽ' नशि मस्त थावऽ'वुनये।।
कालस लंगऽ' लञ्जऽ' छु थलऽ'वुनये।।०।।

रंगऽ' रंगऽ' भक्त्यन रछऽ'वुनये।
हंग रंग तिहुन्दुय आसऽ'वुनये।।
मंगऽ' मंगऽ' तिमनिय छु कासऽ'वुनये।।०।।

मनऽ'कुय भ्रम दूर करऽ'वुनये।
नामऽ' रूपकुय पर्दऽ' चटऽ'वुनये।।
शुर्य भाषण दाद छु दिवऽ'वुनये।।०।।

दानऽ' कुनिय तऽ' बानऽ' छि भ्युऽ'नये।
यस युथ भाव त्युथ दिवऽ'वुनये।।
निर्मल भाव तस छु प्रऽ'यऽ'वुनये।।०।।

हमसऽ' पखऽ'विय उफऽ'नावऽ'वुनये।
रऽ'वऽ' सिऽ'न्ज़ि प्रवऽ' प्रज़लावऽ'वुनये।।
हमसन सीऽ'त्य छु मिलऽ'नावऽ'वुनये।।०।।

प्रंगऽ' पलंगऽ' वथऽ'रावऽ'वुनये।
पयवन्दऽ' सीऽ'त्य फ्वलऽ'नावऽ'वुनये।।
अगम पदस छु वातऽ'नावऽ'वुनये।।०।।

सोन्तऽ' हर्दय ह्युवुय थावऽ'वुनये।
परमऽ' आनन्द प्रावऽ'नावऽ'वुनये।।
मोजस प्यठ करार अनऽ'वुनये।।०।।

सुलि विलि विमल बनावऽ'वुनये।
मनि आऽ'नस ज़ंग तुलऽ'वुनये।।
बन्सरी ज़न्गऽ' तऽ'थ्य वुछऽ'वुनये।।०।।

भजन नं०: (140)

"परम् ब्रह्म परमेश्वर का नस नस में बसा हुआ स्वरूप!"
"भगवान श्रीकृष्ण के विराट् स्वरूप को देखकर अर्जुन देव की प्रतिक्रिया!"

चॖऽ' छुख परमात्म दीव,
बऽ' आत्म दीव वनय च़्य क्याह।
चॖऽ' छुख च़्वपाऽ'र्य कुनिय दीव।।
बऽ' सीर अदऽ' खटय च़्य क्याह।।०।।

चॖऽ' छुख वहरिथ इन्द्रऽ' ज़ाल,
भ्रमराऽ'वमिऽ'त्य बऽ'ड़ वीर च़्य क्याह।
चॖऽ' छुख करिथ साऽ'रिसिय ग्रास।।
बऽ' दास अदऽ' वनय च़्य क्याह।।०।।

चॖऽ' छुख सायि म्येय सीऽ'त्य,
बऽ' लारय अदऽ' कोर तऽ' क्याह।
चॖऽ' छुख पायि बुऽ'ड़ तय।।
बऽ' मायि हुऽ'त वनय च़्य क्याह।।०।।

चॖऽ' छुख प्राऽ'णियन हुन्द प्राण,
दरय बऽ' किऽ'थऽ' व्यनऽ' च़्य क्याह।
चॖऽ' छुख ध्याऽ'नियन हुन्द ध्यान।।
बऽ' दुऽ'गन्यार करय च़्य क्याह।।०।।

चॖऽ' छुख सतगुऽ'रऽ' तऽ' वर,
वरान च़िय वनय च़्य क्याह।

चऽ' छुख तीज़ऽ' सागर।।
परम् ब्रह्म वनय च़्य क्याह।।०।।

राथि त्राथि च्याञि सीऽ'त्य,
हाथि ज़ाथि गछ़ऽ' नऽ' ज़ांह।
च़्यये सीऽ'त्य लय गछ़िथ।।
म्य भय हटि वनय च़्य क्याह।।०।।

च़्योनिय यि पय लभिथ,
बऽ' दूर्यर ज़रय नऽ' ज़ांह।
च़्यये सीऽ'त्य रूज़िथिऽ'य।।
च़्यये व्यनऽ' सरय बऽ' क्याह।।०।।

च़्य छिय हाल रोशन,
बऽ' भावय अदऽ' कस तऽ' क्याह।
चऽ' छुख सिरन सरपोश।।
बऽ' मदऽ' होश वनय च़्य क्याह।।०।।

रुमन मंज़ चऽ' बसिथिय,
बऽ' सर पनुन वन्दय च़्य क्याह।
च़िऽ'ये कर म्वकलन पाय।।
छ़्यनन न्याय वनय च़्य क्याह।।०।।

छु बन्सरी शरण च़्येय।
परण तल रछुन चऽ' क्याह।
च़िऽ'ये छुख सोरुय केन्ह।।
बिऽ'ये अदऽ' वनय च़्य क्याह।।०।।

भजन नं॰: (141)

"संत जनों की परिपक्कवता मानव जाति का उपहार!"

मुऽ'खतऽ' गव पुऽ'खतऽ' तय।
गयि चम्क जाऽ'री।।
साऽ'री लऽ'ग अदऽ' चूनि जरने।।०।।
म्वल नय नेरस कुनि तय।
तूलय छु भाऽ'री।।
साऽ'री आयि अदऽ' तऽ'स्य शरणे।।०।।

भावऽ' पोश फ्वल्य तय।
लाऽ'ग्य चाऽ'स्य चाऽ'री।।
साऽ'री लऽ'ग्य अदऽ' भाव भरने।।०।।
लोलऽ' नारऽ' दऽ'द्य तय।
लऽ'लुव छाऽ'स्य छाऽ'री।।
साऽ'री लऽ'ग्य गुऽ'रऽ' ध्यान धरने।।०।।

सू सू स्वर तय।
ग्रज़ वऽ'छ ज़्वपाऽ'री।।
साऽ'री लऽ'ग्य शिवऽ' शिवऽ' परने।।०।।
खय चऽ'ज्य पूरऽ' तय।
पय द्युत याऽ'री।।
साऽ'री लऽ'ग्य दयि नाव स्वरने।।०।।

भयस गव ज़य तय।
कऽ'र तिमव याऽ'री।।
साऽ'री लऽ'ग्य पयवन्दऽ' करने।।०।।
ध्यान गव स्यद्ध तय।
मुच़रनऽ' आयि ताऽ'री।।
साऽ'री लऽ'ग्य अदऽ' तारऽ' तरने।।०।।
मन गव लय तय।
दूर च़ऽ'ज्य खाऽ'री।।
साऽ'री लऽ'ग्य अदऽ' ज़िन्दऽ' मरने।।०।।
ब्यन्द द्राव स्यन्ध तय।
नाद गव जाऽ'री।।
साऽ'री पाप शाप लऽ'ग्य हरने।।०।।
संतव कऽ'र गथ तय।
रूऽ'ज़्य नामावाऽ'री।।
साऽ'री लऽ'ग्य मनि आऽ'नस गरने।।०।।
भक्त्यव शेरि वतऽ' तय।
रथि खऽ'त्य साऽ'री।।
साऽ'री लऽ'ग्य अदऽ' तऽ'स्य पाऽ'रने।।०।।
बन्सरियस शर तय।
कर फेरि यपाऽ'री।।
ज़ाऽ'री बोज़ि यी जल वरने।।०।।

भजन नं॰: (142)

“नूरी चेतन स्वरूप से जन्म सफल बनाने की प्रार्थना!”

गाशदारो गाह पनऽ'नुय प्रुऽ'खुट च़ऽ' त्राव।
रम्बऽ'वुन रऽ'व असऽ'विऽ'नि मुखय म्य हाव।।०।।
प्रज़लविऽ'नि रूपय द्वीपिय म्य प्रज़ऽ'लाव।
स्व स्वरूपस सीऽ'त्यी न्यथ म्य खेलऽ'नाव।।
समऽ' शान्ति अमृत गलि गले म्य च्याव।।०।।
प्रतिबन्ध साऽ'री दूरिय करिथ म्य थाव।
भवँर गुऽ'फि आवलिऽ'नि मंज़ऽ' कडतन म्य नाव।।
दिहऽ' अद्यासऽ' घासाऽ' वासना म्य ज़ालऽ'नाव।।०।।
सुष्मणाये वति वती म्य पकऽ'नाव।
ब्रह्म रन्ध्रय मंज़ऽ' च़िय म्य पार करऽ'नाव।।
तमि आलमुक आलव च़िय म्य बोज़ऽ'नाव।।०।।
तोरकिऽ'स सोज़स सीऽ'त्य सोज़ म्य मिलऽ'नाव।
राज़ऽ' दरबारस राज़दान म्य च़िय बनाव।।
पनऽ'ने मायि सीऽ'त्यी म्य माय बड़ऽ'राव।।०।।
सुरत म्याऽ'न्य सत्पोर जल च़ऽ' वातऽ'नाव।
युथ नऽ' भ्रमऽ' कुनि वातऽ'नाव अन्द म्योन पढ़ाव।।
अथऽ' रुऽ'ट करऽ'नुय छुय च्योनुय स्वभाव।।०।।
धारऽ'नाये वारऽ' पाऽ'ठ्य ध्यान म्य धारऽ'नाव।
सहज़ऽ' यूगऽ' साधनायि हुन्दुय बजर म्य हाव।।
ब्रह्माण्ड़ऽ' बुर्जसिय बर म्य मुच़ऽ'राव।।०।।

पूरऽ' पाऽ'ठी ज़ूनऽ' ड़बि म्य चूनि जरऽ'नाव।
हथ कमल सहस्रऽ'दल म्योन च़ऽ' फ्वलऽ'राव।।
मानसरऽ' मन्ज़य अच्छ्ऽ'पोश म्य छावऽ'नाव।।०।।
पायि बुऽ'ड़ छुख न्याय म्याऽ'नी च़ऽ' अन्ज़ऽ'राव।
ब्रह्मऽ' आकारऽ' व्रथ जल जल म्य प्रावऽ'नाव।।
दोहऽ' खुऽ'तऽ' दोहऽ' तमिकुय लोल म्य गनिराव।।०।।
आदन भाजि नादन कन चि़य म्य थाव।
परमऽ' धामुक अमृत च़ऽ' जल म्य वर्षाव।।
त्रय तापऽ' संतापुक अग्न म्य शेहलाव।।०।।
बन्सरियस ज़न्म सफल जल चि़ऽ'य बनाव।
सत् चित् आनन्द स्वरूपिय न्वन च़ऽ' प्रख्टाव।।
तऽ'थ्य सीऽ'त्यन लीन गछिथ म्वकलि आव जाव।।०।।

भजन नं० **(143)**

"पूर्ण तल्लीनता तथा शरणागत भाव परमार्थ के अनिवार्य अंग!"

हन हनिय तनिय तनिराऽ'विऽ'म।
मन नोवुम तऽ' शिव मिलऽ'नोवुम।।०।।

रीचक पूरक कुम्भक सुऽ'म्बरोवुम।
सूहम शब्दस त्रम तोरुम।।
छुऽ'पि हुन्द आलम प्रज़ऽ'नोवुम।।०।।

सतगुऽ'रऽ' शब्दिऽ'च्य माय प्राविऽ'म।
दुई जामऽ' झट पट त्रोवुम।।
अज़पा गायित्रय ज़प छोवुम।।०।।

सतगुऽ'रविय सीरा म्य भोवुम।
दुऽ'गन्यारस अुऽ'गन्यार प्रोवुम।।
गुऽ'रऽ' कृपायि सायि प्रख्टोवुम।।०।।

ओरऽ' योरऽ' लोला भाऽ'गरोवुम।
सतगुऽ'रविय न्याय अंज़ऽ'रोवुम।।
गुऽ'रऽ' चरणन पान पुशऽ'रोवुम।।०।।

सत् स्वरूपिय धारणायि दोरुम।
सतगुऽ'रविय ओरय म्य योरुम।।
सम शान्ति रस मन च्यावनोवुम।।०।।

सतगुऽ'रऽ' नादन कन थोवुम।
पान जान अदऽ' तऽ'स्य पुशऽ'रोवुम।।
अंहकारुक दोद बलऽ'रोवुम।।०।।

माऽ'स्यफतुक जाम मन च्योवुम।
दयि लोलिय मनि सनिरोवुम।।
ब्रह्मऽ' भाविय वारऽ' गनिरोवुम।।०।।

आशऽ' पाशन नाश सपदोवुम,
आत्मऽ' ठोकुर मन पूज़ऽ'नोवुम।
बन्सरियन शरणि भाव प्रोवुम।।
मन नोवुम तऽ' शिव मिलऽ'नोवुम।।०।।

भजन नं॰: (144)

"सन्तोष व सबूर प्राप्त करने की कामना!"

मायि हतिनिय मायि भ्वरतुय,
हावतऽ' जलवय पनुन पूर।
लोलऽ' हऽ'त्य आमिऽ'त्य छि लारान।।
थवतऽ' लोल सोन चऽ' मन्ज़ूर।।०।।

लोलऽ' नादन सान्यन थवतऽ' कन,
मतऽ' वुछतऽ' सान्यन कर्मन।
रंगऽ' रंगऽ' वलिमिऽ'त्य छि कर्मव।।
टंगऽ' अनिमिऽ'त्य कासतऽ' ग्यूर।।०।।

पायि बुऽ'ड़ चऽ' छुख थवतऽ' रायि सानि,
माय पनऽ'नी चऽ' भर पूर।
जाय रठतऽ' मंज़ सान्यन दीदन।।
थवतऽ' जाऽ'री पनुन नूर।।०।।

पदि पदि च्येय छिय छारान,
पतऽ' लारान हाव ज़हूर।
तथ सीऽ'त्यन मस्त थविथिय।।
वासनायि प्यचि़ करतऽ' सूर।।०।।

च्याऽ'जी उम्मेज़ प्यठ छि दरिथिय,
नतऽ' छु भवऽ' बन्धन कठूर।
भक्तिवत्सल च्येय छिय वनान।।
छिय मंगान संतूष सबूर।।०।।

मायि हऽ'तिनिय चि़यये छुख वरान,
छुख दयायि हुन्द चि़य सदूर।
शरणि भावय गथ छि मारान।।
पथ च़्य शमहस पोंपूर।।०।।

अऽस्य ति आमिऽत्य आरऽहऽत्य शरण,
प्रावऽनाव असलुक सरूर।
भवऽ बन्धन तऽ साऽरी प्रतिबन्ध।।
बन्सरियस च़ऽ करतऽ दूर।।०।।

भजन नं॰ (145)

"कृपा दृष्टि रखने की विनम्र प्रार्थना!"

चं़ऽ छुख परमात्मऽ दीव,
कृपा कर म्य चि़य।
रक्षा कर रक्षा कर।।
रक्षा कर म्य चि़य।।०।।

बऽ छुस ज़ीव आत्मा,
वरिथ गछ़ म्य चि़य।
दया कर दया कर।।
दया कर म्य चि़य।।०।।

हरी हर च़ऽ पानय,
म्य हर व्याध चि़य।
क्षमा कर क्षमा कर।।
क्षमा कर म्य चि़य।।०।।

नरऽ' रूपय नाराण,
छुख पानय चि़य।
द्रूऽ'न कुन करिथ गछ़।।
हरिथ पाप म्य चि़य।।०।।

च़ऽ' छुख तारन तार,
म्य कर पार चि़य।
भवऽ'सरऽ' तारस।।
म्य ताऽ'रिथ गछ़ चि़य।।०।।

परम् तत्व सतगुऽ'र,
छुख पानय चि़य।
च़ऽ' छुख वाऽ'सिलदर।।
वसालत कर म्य चि़य।।०।।

परात्पर च़राच़र,
आसऽ'वुन छुख चि़य।
विलीन शब्दऽ' सागरस।।
सीऽ'त्य कर म्य चि़य।।०।।

च़ऽ' छुख दीनऽ' दयाल,
दाता छुख चि़य।
दयायि हिऽ'न्ज़ नज़रा।।
म्य कर पानय चि़य।।०।।

च़ऽ' छुख पूर्ण ब्रह्म,
परम् दीव चि़य।
म्यते पूर्णस मन्ज़।।
करिथ लय गछ़ चि़य।।०।।

चऽ’ छुख भक्तिवत्सल,
वरान भक्त्यन चि़य।
छि बन्सरियस ति आश।।
म्य दिख तार चि़य।।०।।

भजन नं० (146)
“ईश्वरीय सत्ता की खोज!”

हूरऽ’ द्रायि वनऽ’वान।
गच्छ करान पानस।।
नूरऽ’ दुर्दीनस गूरऽ’ करने।।०।।
पीरि पीरानस।
नूरि नूरानस।।
मीरि मिर्जानस माय भरने।।०।।

जानि जानानस।
दूरि आऽ’स्यफानस।।
पूरि पयमानस पूरऽ’नावने।।०।।
मिहीनि खानस।
शाहि शाहानस।।
माहि ताबानस द्रायि मेलने।।०।।

अमि लोलऽ’ रूदय करान।
गथ हँसऽ’ नादस।।
हुस्नि दहानस चूनि जरने।।०।।

सुषुम्नायि वति द्रायि।
आकाशऽ' थानस।।
च़्यत् आकाशस सुम गरने।।०।।

दमनि दमान गव।
सूर मस्तानस।।
मानसरस द्राव वतऽ' शेरने।।०।।

माऽ'शोकऽ' शोखिय।
ज़िन्दऽ' रिन्दानस।।
फर्शऽ' प्यठऽ' अर्शस ल्वग उफने।।०।।

यारऽ' दादि व्यसऽ'स्यव।
ह्यस परऽ'वानस।।
शमहस पथ द्राव गथ मारने।।०।।

वुहऽ'विऽ'नि मनकलि।
जोश द्युत अमारस।।
लोलऽ' नारस ल्वग गोशऽ'रावने।।०।।

अमि गोशरनऽ' आव।
होश होशदारस।।
ईशि ईशानस द्राव छ़ारने।।०।।

बन्सरी प्रारान।
दयि फर्मानस।।
नाज़नीनि जानस सर वन्दने।।०।।

भजन नं० (147)

"ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति तथा चुरासी लाख की निवृति का एक मात्र उपाय स्वरूप निष्ठ बनना हैं!"

सोरुय छु सुय केंह नो बिऽ'य।
त्रावतो खुदी जुवो।।०।।

ओर तऽ' योरऽ' सु छु पानय,
करतो बुद्धी जुवो।
करखय सक्रय बनी अक्रय।।
यि छि थऽ'ज़्य समाऽ'धी जुवो।।०।।

स्वरतऽ' दयऽ' दय प्रावख ज़य,
बनी शुऽ'द्धी जुवो।
ललऽ'नाव नाव बऽ'डऽ'राव भाव।।
प्राव सरमदी जुवो।।०।।

पनुन परुद यि छु सोरिय,
मायायि फन्दिय जुवो।
त्राव अमिंुच्य कल बन निर्मल।।
ज़्चठ दुय पर्दय जुवो।।०।।

गछ़तऽ' शरण श्री सतगुऽ'रन,
छि सहज़ऽ' व्यद्धी जुवो।
गुऽ'रऽ' सायि रुऽ'स छुनऽ' केन्ह अन्दान।।
मनि यी व्यच़रतो जुवो।।०।।

शुऽ'ज़र पज़र स्यज़र अभय,
मंगतो दयस ज़ुवो।
मनि यी वनि ननि वानय।।
पानिय पुशरतो ज़ुवो।।०।।

आत्मऽ' स्वरूप निष्ठ युस बन्याव।
आव अथि सार तस ज़ुवो।
ज़ोन सुय सोर यऽ'म्यी मन मोर।।
तोर पान तऽ'म्यी ज़ुवो।।०।।

बन्यरियो सहज़ऽ' भावय,
प्राव गुऽ'रऽ' मायी ज़ुवो।
आत्मऽ' ठोकुर न्यथ चऽ' पूज़ऽ'नाव।।
छाव सरूर अब्दी ज़ुवो।।०।।

भजन नं॰: **(148)**

"श्री रामनाथ काचरू व सु श्री माता कमलावती काचरू के सुपुत्र डॉ॰ चान्द नारायण के अन्तर्ध्यान दिवस पर रचित कविता!"

चाँदिय ओस चाँदिय बन्याव।
चाँद बनिथिय योरऽ' द्राव।।०।।

यूगिया ओस ज़गि आमुत।
यूगियन निशि ज़ामुत।।
प्योमुत सुऽ'न्दर चाँद तस नाव।।०।।

यूग सोधनय पनऽ'नि वाँसे।
भास द्युतनय नऽ' काँसे।।
राज़ तमि सुन्द अथि काँसि नऽ' आव।।०।।

ज़गतस मंज़ नाव थोवुन।
असऽ'वुन मुऽ'ख होवुन।।
थाऽ'विऽ'न नऽ' अदऽ' काँसि हिऽ'न्ज़ ति ग्राव।।०।।

ओस क्याह सना गाह सु त्रावान।
प्रथ मंड़ेजि शूभऽ'रावान।।
शीतल क्याह ओस तमिसुन्द स्वभाव।।०।।

बालुका क्याह आस सु बनिथ।
असि निशि न्यून छ्यनऽ' करिथ।।
वुछतऽ' तस मा आर सोन आव।।०।।

सतगुऽ'रन सीऽ'त्य गव सु मीलिथ।
ज़न्मिऽ'क कष्टऽ' झीलिऽ'थ।।
तीलिथ क्वरुन साऽ'रिसिय क्राव।।०।।

बन्सरियो वनऽ'नुय थाव।
अन्द्रय यि सीर व्यपऽ'राव।।
मनि मन्ज़िय थव तसुन्द भाव।।०।।

भजन नं०: **(149)**

"जंगलवाड (ठाठरी) ड़ोड़ा में **15** अगस्त **1986** को स्वतंत्रता दिवस पर रचित कविता!"

असि छि प्राऽ'वमिऽ'च़ अज़ आज़ादी।
अऽ'स्य मनाविऽ'नि आमिऽ'त्य छि शाऽ'दी।।०।।
कुन्ताऽ'जी वरी गयि अज़ पूर।
कुन्वुहशत तऽ' सतऽ'ताऽ'जी छुनऽ' दूर।।
यलि फिरऽ'विऽ'ख अमिच्यी मनाऽ'दी।।०।।
अऽ'स्य आमिऽ'त्य अज़ समिथ साऽ'री।
रोज़ि अदऽ' अमिकुय नूर जाऽ'री।।
काँछ्यव असऽ'लिऽ'च्य आबादी।।०।।
पायि बऽ'ड़्यव कऽ'रिस आबियाऽ'री।
असि दिचि़ऽ'ख लभिथ सरदारी।।
त्रावव जहालथ छि बरबाऽ'दी।।०।।
दुय तय हसद अऽ'स्य मशिरावव।
ओर तऽ' योरऽ' लोल भाऽ'गरावव।।
अख अकिसिऽ'न्द कऽ'रऽ'व दूर दाऽ'दी।।०।।
मायि सीऽ'त्यी न्याय अन्ज़ऽ'रावव।
उग्रवादुक न्याल अऽ'स्य गालव।।
खुऽ'शहाऽ'ली करऽ'व अऽ'स्य लाऽ'दी।।०।।
बन्सरियो बाग फ्वलऽ'रावव।
इन्साऽ'नयतुक नाव ज़िऽ'न्दऽ' थावव।।
नज़रि थावव गाँधे सिऽ'न्ज़ समाधी।।०।।

भजन नं॰ : (150)

"निष्काम भाव से कर्मों का भोगना ही जन्म
को सफल बनाने का उपाय!"

कर्मऽ' भूगन हुन्दिय फल,
रोज़ भूगान चऽ' निष्कल।
थव मो अदऽ' कुनिची कल।।
भूग्य भूग्य बन चऽ' निर्मल।।०।।

कर्म बन्धन वुछ छु दल दल,
युस फसान तऽ'स्य रटान तल।
मुह तय मद अमिऽ'क छि मोकल।।
अति छि बऽ'ड़्य वीर ति निर्बल।।०।।

कर्मऽ' भूग भूगुन छु अटल,
अति चलि नऽ' केंह छल बल।
मुश्किल छ्यनिन छि कर्मऽ' हाँऽ'कल।।
स्वरूप निष्ठ बनुन अथ छु हल।।०।।

शरणऽ' भावय सीऽ'त्यी छल,
कर्मन हिऽ'न्द यिमय मल।
ड़लस मंज़ रोज़ ज़न ख्यल।।
अदऽ' अन्दन न्याय जल जल।।०।।

अदऽ' चलि सोरुये ज़लऽ' ज़ल,
बनि सुरत ति निश्चल।
शब्दस सीऽ'त्यी गछ्रि रल।।
बनि सौर चक्कर मुकऽ'मल।।०।।

सत्गुऽ'र वुछ छि भक्ति वत्सल,
करान दूर मनुक छि हल चल।
भक्त्यन रछ़ान दामनस तल।।
फ्वलान तिम छि पम्पोशऽ' ड़ल।।०।।

धुन आत्मिऽ'च्य ह्यथ सम्बल,
लाग आत्मऽ' सुऽ'दरस ढुँगल।
कर्मऽ' भूग भूगुन गछ़ि सहल।।
बनि जंगलस ति मंगल।।०।।

बन्सरियो छि करिन अमल,
नेरि ओट महीन मालि तल।
सर्वऽ' कर्मऽ' पन छ्यनन जल जल।।
बनि अदऽ' ज़न्म सफल।।०।।

राधा स्वामी सहाय।
"हिन्दी में रचित चन्द कविताएँ"

भजन नं॰: (151) से लेकर

भजन नं॰: (162) तक

भजन नं॰: (151)

“राधा स्वामी मत की रूप रेखा!”

(Chronology)

राधा स्वामी! राधा स्वामी!
राधा स्वामी जय।।
अनहद शब्द है यह मारफत का मय।।०।।
संत कबीर जी ने इस वाणी को गाया।
स्वामी शिव दयाल ने अन्तर में पाया।।
नव साल की तपस्या में होकर लय।।०।।
अन्तर की धारा को उल्टाया।
स्वामी इसी के संग में लगाया।।
संत तुलसी जी से लेकर इसका पय।।०।।
राय बहादुर सालेग्राम जी ने प्रकटाया।
ब्रह्म शंकर मिश्र जी ने चम्काया।।
महर्षी शिव ब्रत लाल ने बजाई इसकी नय।।०।।
हुशारपुर में होशियार हुए बाबा फ़कीर चन्द।
नन्दूभाई जी ने गाया यही छन्द।।
स्वामी गोविन्द कोल जी ने पी लिया यही मय।।०।।
अमृत रस यह उस ने सब को पिलाया।
जब महर्षी जी का पैगाम आया।।
सब को बना लिया है उसने अभय।।०।।

संत सावन सिंघ ने व्यास में उठाई अलम।
महात्मा पृथ्वी नाथ जी को मिल गया कलम।।
माता कमला जी ने पाया इसी का पय।।०।।

संत कृपाल सिंध जी का हुआ सिद्ध यह ध्यान।
विश्वभर में उसने पाया सम्मान।।
राधा स्वामी शब्द बनाया उसने विश्वमय।।०।।

राधा स्वामी शब्द का है कितना कमाल।
सिद्ध होकर ही दिखाता है जमाल।।
जब होता है सिद्ध खिलता है हृदय।।०।।

राम नाम सत् नाम राधा स्वामी है।
अन्तर में यह नाम सुनना है।।
प्रति क्षण प्रति पल इसकी करनी है क्रय।।०।।

राधा स्वामी शब्द से हुआ है सब का उद्धार।
अगम का यह मंत्र है सार।।
बन्सरी भी भरता है इसी में प्रय।।०।।

भजन नं॰ (152)

"योग अभ्यास रूपी अन्तर न्यास द्वारा
आत्मानन्द की प्राप्ति!"

गजानन का प्रथम है द्वार।
ओ३म हरि: नम: इसका आधार।।०।।
मूलाधार यह चम्कता सितार।
चार पातों का है कुण्ड़लाकार।।
पहले करना यहाँ है जुहार।।०।।
स्वाधिष्ठान है षठ्कोणाकार।
ब्रह्मस्थान का है ब्रह्म मंत्र सार।।
तीजा है मणिपुर श्री विष्णु द्वार।।०।।
अनाहत् चक्र चौथा है दरबार।
जोत निरञ्जन बनता साकार।।
गुरु शरणन से है बेढ़ा पार।।०।।
मधिमा से ही चम्कती है धार।
रारंग सारंग की बजती है तार।।
रोम रोम में रमता है रारङ्कार।।०।।
भ्रूमध्य में ज्योती का भण्ड़ार।
सो३हम सू चम्काता ओ३मकार।।
द्वादशान्त मण्ड़ल में होता सण्चार।।०।।
पिण्ड़ से उठती है यह धार।
ब्रह्माण्ड़ में करता है गुञ्जार।।
राधा स्वामी शब्द है सरकार।।०।।

पाँच नामों का संगम है सार।
रुञ झुञ रुञ झुञ की झङ्कार।।
सत् धुन्न पर होना है बलिहार।।०।।
धुन्नात्मक की रुञ झुञ पुकार।
सुनिये सत्गुरु के दरबार।।
सत्गुरु मेहर यहाँ है दरकार।।०।।
अनहद शब्द की नित हुँकार।
अलख अगम आनन्द है अपार।।
जीवन मुक्त जीव होता बेदार।।०।।
राधा स्वामी की है पुकार।
स्मरण ध्यान और धुन है सार।।
जीवात्मा का है निश्चित उद्धार।।०।।
सुरत शब्द का संगम है तार।
भवँर गुफा से होता है पार।।
सुन्न महा सुन्न में आता करार।।०।।
सत्गुरु महिमा है अपरम्पार।
मिटाता माया मोह अंहकार।।
भक्तों की रक्षा है बारम्बार।।०।।
बन्सरी सत्गुरु का दीदार।
अन्तर स्वरूप है रहस्य साकार।।
सहस्रदल तक है बहार ही बहार।।०।।

भजन नं०: (153)

"शिव शक्ति के साकार स्वरूप की आरती!"

जय गौरी शंकर;
जय राधे श्याम।
राम राम राम राम;
जय सिया राम।।०।।

आरती उतारूँ तेरी सुबह शाम।
रात दिन जपा करूँ मैं तेरा नाम ।।
मन ही मन में पाओं विश्राम।।०।।

तुझ को करूँ मैं ढ़ण्ढ़वत् प्रणाम।
पूजा करूँ मैं तेरी निष्काम।।
मन मेरा बना दे निज धाम।।०।।

रोम रोम में रमा रह मेरे राम।
लागे लगन मुझे तेरी आठों याम।।
तू ही बना दे मन मेरा राम।।०।।

तू ही बना दे मेरे बिगड़े काम।
सुलझा दे उलझन मेरे तमाम।।
तू ही मिटा दे जग का कुहराम।।०।।

तू ही सुना दे वसले पैगाम।
अनहद रस का पिला दे जाम।।
शाँत मन बना दे पाओं आराम।।०।।

मै हूँ सदा से ही तेरा गुलाम।
माँगता हूँ तुझ से यही इन्नाम।।
पाहि माम् पाहि माम् पाहे माम्।।०।।
बन्सरी तान सुना दे घनश्याम।
बन्सरी का मन गाये सत् नाम।।
जिसका होगा भला अञ्जाम।।०।।

भजन नं० (154)
"व्योम तत्त्व की महानता इसका सुहाना स्वरूप तथा पहचान!"

क्या ही सुहाना है,
मंज़िल जो ठिकाना है।
एक ही ध्याना है।।
मन का रमाणा है।।०।।
शुद्ध मन से खोजना है,
सहज में ही पाना है।
जिसने ही जाना है।।
उसी ने पहचाना है।।०।।
ध्यानों के झुर्मुठ में,
प्राणों की आहुति है।
सत्गुरु मन्त्र से ही।।
अन्तर को जगाना है।।०।।

बाहिर को त्यागना है,
अन्तर को सजाना है।
आत्म स्वरूप से ही।।
मन को लुभाना है।।०।।

काँती का पुँज है,
शाँती का कुँज है।
इसी सूनेपन में।।
मन को सहलाना है।।०।।

सिन्धु से बिन्दु है,
बिन्दु में सिन्धु है।
यह आश्चर्य लीला है।।
इसी में लय होना है।।०।।

रोगों का औषध है,
भागों का वैभव है।
भोगों के भोगने में।।
ना यहाँ खोना है।।०।।

ना कुछ लेना है।
ना कुछ देना है।
चिन्तन मात्र से ही।।
चित को बहलाना है।।०।।

आदि अन्त मध्य में ही,
सब कुछ समाना है।
सार तत्त्व जानना है।।
झँझट ही मिटाना है।।०।।

समाधी अवस्था जो है,
शरणागतों की गत है।
सत्गुरु कृपा जब है।।
तो क्या कुछ कहना है।।०।।

बन्सरी यह गाना है,
सुन्दर सा तराना है।
गायन मात्र से ही।।
दिल का मिलाना है।।०।।

भजन नं० (155)

“सर्वशक्तिमान ईश्वर का निवास सदा ही भक्तों के पास में!”

प्रभु खोजने था दूर चला।
खोजा तो था पास ही भला।।०।।

भूला जो भटका था फिरा,
गुरु भक्ति से भव नद तरा।।
राही को सन्मार्ग मिला।।०।।

सत्गुरु मंत्र चित धरा।
गागर में सागर तो भरा।।
साधा रत्न अनमोल मिला।।०।।

केवल वह ही वह भाया।
भाया जो वह ही सच पाया।।
जित देखा उत वह मिला।।०।।

साकार से निराकार जना।
विश्वास अपना दृढ़ बना।।
नैय्या को बस साहिल मिला।०।।

अन्तर का पट झट पट खुला।
माया का पर्दा हट गया।।
सत्गुरु कृपा से सब मिला।।०।।

बाहिर का बन्धन कट गया।
अन्तर का नाता बन्द गया।।
निज धाम का आनन्द मिला।।०।।

आत्म अनुभव जो सर हुआ।
सत्गुरु स्वरूप घर कर गया।।
परम् तत्त्व मर्म का बल मिला।।०।।

अन्तर में वह ही वह रमा।
बस बन्सरी का चित जमा।।
बे बस को बस आसरा मिला।।०।।

भजन नं० **(156)**

"ब्रह्मात्म सक्षात्कार होने की पुकार!"

मन के मोहने वाले मोहना,
तुझ से है यह मेरी अर्ज़।
वास कर मन में तू मेरे।।
कर ले पूरा मेरा गर्ज़।।०।।

मैं हूँ प्राणी है तू दानी,
माँगता तुझ से हूँ दान।
बख्श दे मेरे खत्ता सब।।
कर ले पूरा अपना फर्ज़।।०।।

दूर मेरे मन के हल चल,
कर ले मेरे मन को शाँत।
खोल कर अन्तर के पट सब।।
दे मिटा मन के मर्ज़।।०।।

जा ब जा है गान तेरा,
शान तेरी है महान्।
मैं भी आया हूँ शरण में।।
दे मुझे शाँती का दर्स।।०।।

आत्म निश्चय दृढ़ बनाकर,
संकल्प रख मुझ से दूर।
स्व स्वरूप में लीन करके।।
दे मुझे संतो का तर्ज़।।०।।

अमर ज्योती को जगा कर,
कर सफल मेरा जन्म।
नाम का मंज़र दिखा कर।।
दे चुका अपना कर्ज़।।०।।

जोत तेरी है जगत में।
शब्द से है ओत प्रोत।
बन्सरी तुझ पर है वारी।।
भर ले मेरे मन की दर्ज़।।०।।

भजन नं० (157)

"आत्मानन्द स्वरूप 'चन्दा' के लक्षण तथा असकी महानता!"

ओ चन्दा! ओ हमरी आली!
करना हमरी रखवाली।।०।।

ओ अन्तर की उज्जवल ज्योती।
मानसर की सुन्दर मोती।।
छायी है तुझ में सब लाली।।०।।

ओ मन की मोजों के आधार।
करना सारे जग का उद्धार।।
फैला दे शाँती ड़ाली ड़ाली।।०।।

तू है अजर तू ही है अमर।
तुझ पर है सब कुछ निर्भर।।
तू ही है सब से बलशाली।।०।।

तुझ से है प्रकृती का चित्रण।
चित व्रत्तियों का है मिश्रण।।
तू ही है सत् धाम पहुँचाने वाली।।०।।

तेरा स्मरण तेरा दर्शन।
चाहते हैं हम भी प्रति क्षण।।
शीतलता को है देने वाली।।०।।

तेरी शरण में आयें हम।
आँखे हमरी हैं पुर नम।।
फैला दे हर सू हरियाली।।०।।

बन्सरी तुझ पर है वारी।
चाहता है तुमरी यारी।।
तु ही है हमरे बाग की माली।।०।।

भजन नं० (158)

"पंच भूतात्मक शरीर में पंच परमेश्वर का प्रकटीकरण!"

पंच रंग चोला पाय के,
आये जग मञ्झार।
चोला यहाँ बिसराय के।।
चलिए गुरु दरबार।।०।।

पँच भूतात्मक पहचानिए,
पँच परमेश्वर है सार।
पँचम सुर में गाइये।।
पाइये जगत् आधार।।०।।

पँच नाम कुँजी लेय के,
खोलिए पँच द्वार।
सब का आनन्द पाय के।।
चलिए अगम अपार।।०।।

पँचानन को ध्याइये,
भ्रूमध्य के मँझधार।
पँच इन्द्रय लय कीजिए।।
सुनिये भ्रमर गुँजार।।०।।

पाँचों का इक कीजिए,
गाइये सत् कर्त्तार।
स्व स्वरूप शिवमय पाइये।।
होइये भवसर पार।।०।।

आत्म स्वरूप प्रकटाइए,
है ब्रह्मात्म साकार।
बन्सरी सूरत उल्टाइए।।
करिए गुरु दीदार।।०।।

भजन नं० (159)

"ओ३मकार का वास्तविक स्वरूप तथा मानवजीवन के साथ सम्बन्ध!"

यह है स्वप्ना सारा संसार।
रहना है यहाँ सदा बेदार।।०।।
जो कुछ है बस है ईश्वर।
बाकी सब कुछ है नश्वर।।
फिर क्यों होना है गिरिफ्तार।।०।।
अविधा से है सारी द्धुविदा।
सर्वव्यापक हैं खुद ही खुदा।।
अद्वैत का करना है व्यवहार।।०।।
जो है स्वप्ना सो है जाग्रत्।
सुष्पती की सी रखनी है व्रत्।।
सुष्पती से परे तुर्या है सार।।०।।

ओ३मकार के हैं यही चार पाद।
स्मरण करने से दूर होगी व्याध।।
मात्रा और अकार,उकार,मकार।।०।।

ओ३मकार में लय होते हैं जब।
अन्तर के पट खुलते हैं सब।।
आत्म प्रकाश ही ब्रह्म है साकार।।०।।

आत्म स्वरूप में होना है लय।
तुर्यातीत की भरनी है प्रय।।
सत् चित् आनन्द का यही है आधार।।०।।

चित् फुर्णा का होना है बन्द।
निर्विकल्प बनना है निर्द्वन्द्व।।
सम शान्ति रस पीना है दरकार।।०।।

सब कुछ उद्घूग से है करना।
उद्घगीत है सदा ही सुनना।।
निर्मल चित् बनना है निर्विकार।।०।।

मानव बनना है मन जीत।
शिव जी जो हैं त्रिगुणातीत।।
कल्याण के हैं वही भण्ड़ार।।०।।

बाहिर को बन्सरी तुम छोड़।
अन्दर ही अन्दर मन मोड़।।
अन्तर में पाना है दीदार।।०।।

भजन नं॰ (160)

“मानव जीवन की अस्थिरता, वास्तविकता का बोध और मानव जन्म के उद्धारता का उपचार!”

इस दुनिया के आँगन में,
कितने ही आते जाते हैं।
कुछ तो इधर से आते हैं।।
तो कुछ उधर को जाते हैं।।०।।

क्या ही अजब यह तमाशा है,
आते ही नाते बँधते हैं।
कुछ तो अपने बनते हैं।।
तो कुछ पराये होते हैं।।०।।

ना कोई अपना होता है,
ना ही पराये होते हैं।
अपने होते हुये भी।।
सब ही पराये होते हैं।।०।।

सब ही यहाँ पर मुसाफिर हैं,
बारी पर चल पड़ते हैं।
चाहते हुए भी कभी।।
ना ही यहाँ रह पाते हैं।।०।।

पल भर के इस मेले में,
कितने झमेले होते हैं।
कुछ तो यहाँ पर हँसते हैं।।
तो कुछ वहाँ पर रोते हैं।।०।।

सुख दुःख के इस सहरा में,
कितने ही तूफान आते हैं।
कुछ तो दुःखी हो जाते हैं।।
तो कुछ हँस कर सहते हैं।।०।।

जग जीवन बस स्वप्ना है,
सब भ्रम में फँस जाते हैं।
जब ही आँखें खुलती हैं।।
तब सब भ्रम मिट जाते हैं।।०।।

जीवन तो इक नैया हैं,
सत्गुरु इसको खेते हैं।
यह तो केवल सत्गुरु हैं।।
बेड़ा पार लगाते हैं।।०।।

भक्त जनों के वत्सल हैं,
अन्त तक साथ निभाते हैं।
उनकी कृपा जब होती हैं।।
सब मुश्किल हल होते हैं।।०।।

गुरु चरणों की धूली को,
सिर पर जो धारण करते हैं।
उनके भाग्य तो खुलते हैं।।
अन्तर्मुखी बन जाते हैं।।०।।

बन्सरी नित ही मन में,
सत्गुरु को ही मनाते हैं।
जिनका अनुग्रह पाते ही।।
सब ही रहस्य खुल जाते हैं।।०।।

भजन नं० (161)

"अहम का त्यागना ही परम् आनन्द का पाना है!"

दयी दयी सब करत हैं,
दुई हरत कोई कोय।
जा के मन से दुई हरे।।
सोई तरे भव तोय।।०।।

राम राम सब रटत हैं,
राम में रमत कोई कोय।
परम् तत्त्व सोई पावे।।
गुरु मुख जो कोई होय।।०।।

घट घट राम बसत हैं,
ऐसा बरत कोई कोय।
मानवता का सच्चा पुजारी।।
विरला है ऐसा कोय।।०।।

शिव शिव सब ही जपत हैं,
शिवमय बनत कोई कोय।
शिवमय बन कर जो कोई पूजे।।
तो सार्थक पूजा होय।।०।।

हरि: हरि: सब ही भजत हैं,
हरि: रस पिवत कोई कोय।
सच्चा प्रेमी जो कोई होवे।।
हरि: दर्शन पावे सोय।।०।।

मेरा मेरा सब करत हैं,
ममत्त्व जानत कोई कोय।
सूहम पद में अहम समाये।।
दो सिमटे इक होय।।०।।

माया छाया सब कहत हैं,
माया तजत कोई कोय।
माया भ्रम जब तक ना मिटे।।
तब तक कुछ ना होय।।०।।

दुई नाम इक रोग है,
उपचार लभत कोई कोय।
सत्गुरु वैद्य जो कोई पावे।।
रोग मुक्त होवे सोय।।०।।

गुरु गुरु शोर हर ओर है,
गुरु गत् चीन्हत कोई कोय।
सच्चा स्नेही गुरु का होवे।।
दुःख काहे को होय।।०।।

सत् स्वरूप सत् स्मरण से,
ना च्युत होवे कोय।
बन्सरी सदा ही सत्गुरु से।।
विनती करत कर जोय।।०।।

भनज नं०: **(162)**

"श्री लक्ष्मी माता की आरती तथा अस्तुती!"

जय सुवर्ण वर्णी,
जय नारायणी।
जय कल्याणी।।
जय जग माता।।०।।

जय शुक्ल सुन्दरी,
जय परमेश्वरी।
जय भुवनेश्वरी।।
जय सिन्धु सुता।।०।।

जय सर्वेश्वरी,
जय मातेश्वरी।
जय दातेश्वरी।।
जय मूक्ष्यदाता।।०।।

जय राजेश्वरी,
जय विश्वेश्वरी।
जय अमरेश्वरी।।
जय महा माता।।०।।

जय मांगलेश्वरी,
जय माहेश्वरी।
जय गज लक्ष्मी।।
जय त्रास त्राता।।०।।

जय शक्ति दायिनी,
जय भक्त रमणी।
जय पद्मासिनी।।
जय लक्ष्मी माता।।०।।

जय जग मोहिनी,
जय विश्व व्यापिनी।
जय जग तारिनी।।
जय सर्व ज्ञाता।।०।।

सर्व सिद्धि कारिणी,
यज्ञ कार्य पुर्णी।
जय धर्म दात्री।।
जय श्री माता।।०।।

भव भय हारिणी,
कष्ट निवारिणी।
जय विष्णु शक्ति।।
जय सुख दाता।।०।।

मंगल कारिणी,
कर्म सँवारिणी।
अलंकृत सुशोभिणी।।
जन मन राता।।०।।

शरण तुम्हारी,
आया बन्सरी।
कृपा करो।।
हम पर माता।।०।।

ॐ R.S

"राधा स्वामी" मत का अनुक्रम (Chronology)

"ॐ आदि स्वद्धिभ्यो: नम:!"

↓

"संत कबीर दास जी महाराज" (1398+5180)

↓

"संत तुलसी साहब जी महाराज" (1763-1843) → असली नाम "श्यामराव पेशवा" "घट रामायण" के रचयिता

↓

"सेठ हज़ूर शिव दयाल सिंह जी महाराज"
(आदि गुरु) -- (25-8-1818 to 15-6-1878)

↓

परम दयाल फकीर चन्दजी महाराज (18-11-1886 to 12-09-1981)

↓

पुन्नी गली, आगरा! सत् नाम अनामी सुरत–शब्द योग का प्रथम सत्संग जनवरी 1861 वसंत पंचमी के दिन स्वामी वाग, आगरा से आरम्भ किया। अर्थात् इसी दिन से इस मत्त का श्री गणेश हुआ। इनके शिष्यों में गुरु पदवी प्राप्त होनेवाले विशेष शिष्य इस प्रकार हैं :–

↓

- "बाबा जैमल सिंह जी महाराज"(जुलाई,1838 to 29-12-1903) बाबा डेरा, बटाला गुरुदासपुर, के गाँव घुमाणा पंजाब! आदि गुरु से नाम दान की प्राप्ति 1856 में। आध्यात्मिक कार्य भार ब्यास पंजाब में सम्भालने का वर्ष 1879 में
  - ↓ "संत भागा सिंह जी!"
  - ↓ (A)
- "सेठ प्रताप सिंह जी महाराज" (1830 to 1909) राधस्वामी बाग के सत्संग का कार्य भार इनको सौंपा गया था। यह आदि गुरु के भाई भी थे।
- "बाबा गरीब दास जी महाराज!" सराय रोहिला, देहली के सत्संग का कार्य भार इन्होंने सम्भाला।
- "राय बहादुर हज़ूर सालेग्राम जी महाराज!" (14-3-1829 to 6-12-1898) इनके चलाये हुए राधा स्वामी मत्त पर सत्संग का प्रारम्भ हज़ूरी भवन, पीपल मण्ड़ी, आगरा में हुआ! आदि गुरु से नाम दान की प्राप्ति वर्ष 1858 में हुई। 1887 ई. तक पोस्ट मास्टर जनरल के पद पर नियुक्त रहे।
- "राधा जी माता" असली नाम "माता नारायणी देवी!" आदि गुरु की धर्म पत्नी व शिष्या! आगरा में नारियों की शिक्षा–दीक्षा का कार्य भार इनको ही सौंपा गया अन्तर्ध्यान दिवस 1-11-1894

(A)

(A)

"हज़ूर महाराज दीन दयाल बाबा संत सावन सिंह जी" (19-7-1858 to 12-4-1948) (लुधियाना, पंजाब) 15-10-1894 को बाबा जैमल सिंह जी द्वारा नाम दान की प्राप्ति। छोटी उमर में राय बहादुर सालेग्राम जी द्वारा भी दीक्षित। बाद में गद्दी की प्राप्ति इनको

"हज़ूर सरदार बहादुर महाराज जगत् सिंह जी" (27-7-1884 to 23-10-1951) (जालन्धर,पंजाब) दीक्षा प्राप्ति बाबा संत सावन जी द्वारा संप्तम्बर, 1909 में।

"संत महाराज चरण सिंह जी" (12-12-1916 to 1-6-1990) (ब्यास, पंजाब) दीक्षा प्राप्ति - 30 जनवरी, 1933 ब्यास

"संत महाराज गुरविन्दर सिंह जी!"

"संत कृपाल सिंह जी महाराज" (देहली) (6-2-1894 to 21-8-1974) राधा स्वामी मत्त के सत्संग की धर्म शाला देहली में स्थापित की तथा विश्वभर में मत्त का प्रचार

"संत दर्शन सिंह जी महाराज"

"संत रजन्द्र सिंह जी महाराज!"

"संत तेजा सिंह जी

"महाराज साहिव पं॰ ब्रह्म शंकर मिश्र जी" (28-3-1861 to 12-10-1907) महल्ला पियरी कवीर चौराह, बनारस। राधा स्वामी मत्त की वास्तविकता पर अंग्रेज़ी में पुस्तक भी लिखी। बनारस में सत्संग का कार्यभार भी

(B)

"दाता दयाल महर्षि शिव ब्रतलाल वरमन जी महाराज" (23-2-1860 to 23-2-1939) इनका जन्म शिवरात्री के दिन प्रात: 12 बज कर 30 मि॰ पर ज़िल्ला बुद्धवाई, बनारस में हुआ। और अन्तध्यनि प्रात: 4 बजे राधा स्वामी धाम में हुआ। बाबा संत सावन सिंह जी द्वारा भी दीक्षित हुए है। 1911 में जापान, अमरीका आदि विदेशों में भी प्रचार किया। 1918 में वह हैदराबाद दक्षिण चले गये जहाँ राधा स्वामी मत्त प्रचार की नींव डाली! 1921 में बनारस आकर राधा सवामी धाम सत्संग भवन की स्थापना

संत अयोध्या प्रसाद हज़ूर

काश्मीर में:— "परम् पूज्य श्री स्वामी गोविन्द कौल जी महाराज" (7-3-1892 to 12-8-1973) हानन्द चवलगाम, कुलगाम, अनन्तनाग, काश्मीर (वन्पुह)! सुरत—शब्द योग (सहज योग) के अनुभव द्वारा सभी भक्त जन्नो को जागृत किया!

पंजाब में :—
"संत बाबा फकरी चन्द जी महाराज!" (18-11-1886 to 12-9-1981) होशियार पुर (पंजाब), मानवता—मन्दिर। अन्तध्यॉन दिवस :—
10-9-1981 (Indian date)
12-9-1981 (American date)

दक्षिण में:—
"संत नन्दूभाई जी महाराज!" हथकमण्डू हैदरबाद दक्षिण में सत्संग आदि का कार्य भार सम्बाला!

मानव दयाल डॉ॰ ईश्वर चन्द्र जी महाराज!"

संत विजय दयाल शून्यो जी महाराज

संत शब्दानन्द जी महाराज

"माता कमला जी काचरू" (राधा माता जी) रुधनाथ मन्दिर, श्रीनगर, काश्मीर! आश्रम :— महेन्द्र नगर, कनाल रोड़, जम्मू (तवी)।

"पंड़ित दयाल स्वामी पृथ्वीनाथ जी महाराज" (मुम्बई)! मुरन, पुलवामा, काश्मीर! आश्रम :— महेन्द्र नगर, कनाल रोड़, जम्मू (तवी)!

प्रेमांजल माँ निर्मला जी

आदि, आदि!

[illegible]

[illegible] (18-11-1886 से
12-9-1901) [illegible]

[illegible]